www.mahisandesh.com

साहित्यिक और सामाजिक मूल्यों की मासिक पत्रिका

R.N.I. No.
RAJHIN/2018/75539

ISSN : 2581-9208

माही संदेश

दस्तक दिल तक

यूँ बीत गए लम्हे पल छिन
पर जान नहीं कोई पाया
ये दौलत प्यार के रिश्तों की
जैसे सिर पर हरदम छाया
हम बांट रहे थे बस पैसा
ये प्यार कभी ना बंट पाया
जब पड़े पांव में छाले मेरे
याद यही मरहम आया

- माला रोहित कृष्ण नंदन

वर्ष : 2 अंक : 11 फरवरी : 2020 पृष्ठ संख्या : 32 मूल्य : 35/-

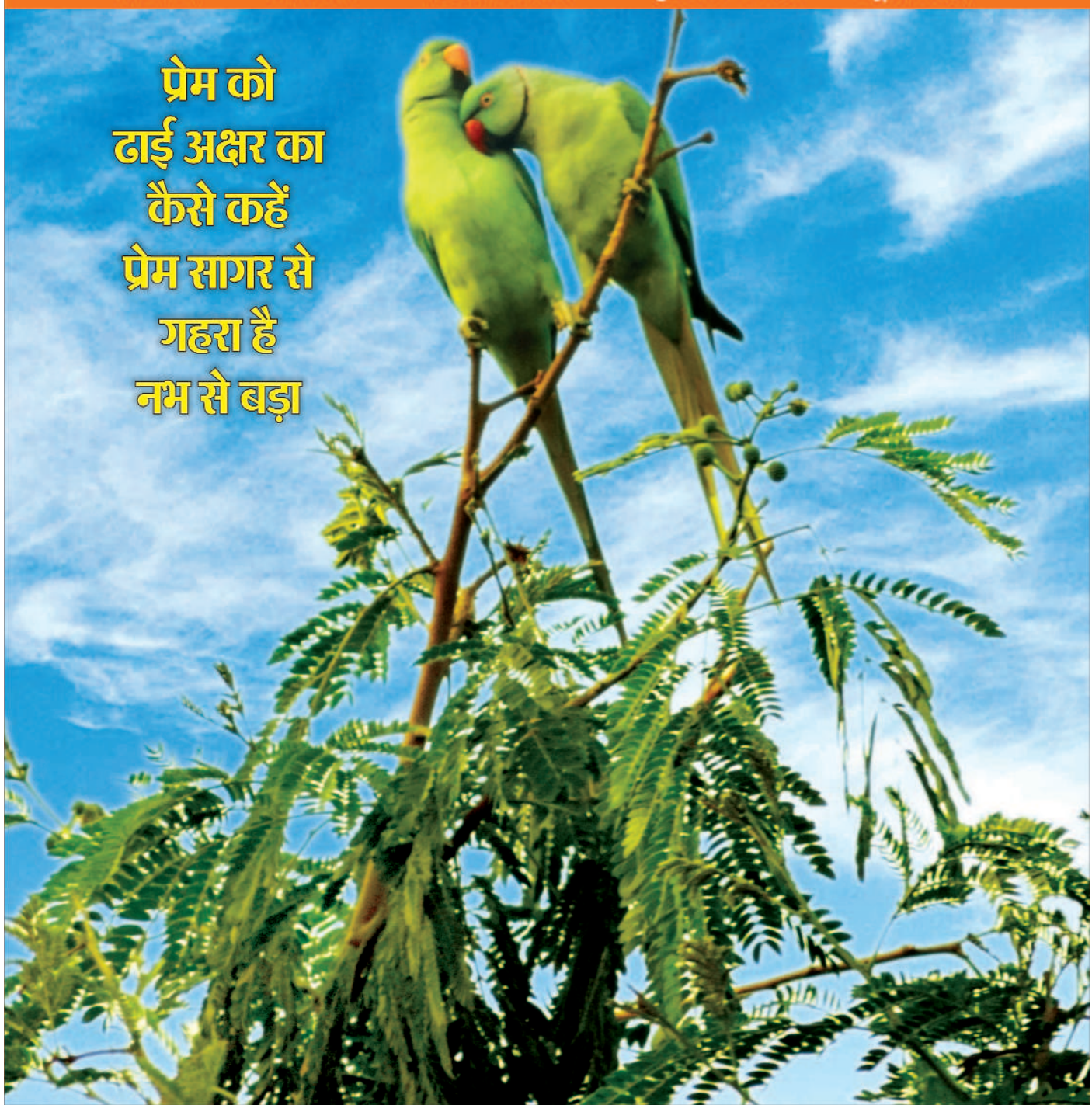

प्रेम को ढाई अक्षर का कैसे कहें प्रेम सागर से गहरा है नभ से बड़ा

कुष्ठ पीड़ितों की सेवा में समर्पित जीवन

थिया मुकली

माही संदेश के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन व सह-संपादक ममता पंडित की थिया मुकली से विशेष बातचीत

'लाइफ विदाउट लेप्रोसी' की संस्थापक थिया कोसे मुकली एक लंबे अरसे से कुष्ठ रोगियों के पुनरुत्थान के लिए कार्य कर रही हैं। जर्मनी के साथ-साथ भारत के कई हिस्सों में संस्था ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

परिवार

थिया मुकली बताती हैं कि उनका परिवार उत्तर पश्चिम जर्मनी के एक छोटे से शहर पापन बर्ग में रहता है। पिछली तीन पीढ़ियों से इस परिवार ने अपने चार सिनेमाघरों में प्रदर्शित चलचित्रों के माध्यम से लोगों के जीवन में खुशियां बांटी हैं। लोगों को खुशियां बांटना और उनकी खुशी में खुश होना ही परिवार का प्रमुख उद्देश्य है जिस तरह सिनेमा के द्वारा यह परिवार दूसरों की जिंदगी में खुशियों का संचार करता है उसी तरह इनके जीवन को बदलने में सिनेमा का विशेष हाथ है।

भारत से लगाव

थिया मुकली के भारत की ओर आकर्षण का एक रोचक किस्सा है। बचपन में किसी चलचित्र में उन्होंने ताजमहल देखा और इतनी प्रभावित हुईं कि उन्होंने ठान लिया कि मौका मिलते ही वे भारत अवश्य आएंगी। किस्मत ने उनका साथ दिया और एक पर्यटक के रूप में पहली बार भारत आईं और यहां की सांस्कृतिक विरासत देखकर उनमें इसे और गहराई से समझने की उत्सुकता जागी। थिया कहती हैं कि भारत के लोगों की सादगी और यहां की विविधता ने उनका दिल जीत लिया। वो भारत लगातार आने लगीं और यहां की सभ्यता के साथ-साथ उन्हें दुख और बीमारी से जूझते हुए लोगों के दृश्य भी दिखे। उन्हें लगा कि वो इनकी मदद कर सकती हैं और यूं शुरुआत हुई 'लाइफ विदाउट लेप्रोसी' संस्था की। **शेष पृष्ठ 30 पर**

माही संदेश (राष्ट्रीय पत्रिका)

संस्थापक डॉ. मदनलाल शर्मा*

v v v

संरक्षक-सलाहकार सुधीर माथुर*

v v v

प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन (98874-09303)

v v v

प्रबंध निदेशक डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा*

v v v

सह-संपादक नित्या शुक्ला*
ममता पंडित*
डॉ. महेश चन्द*
वंदना शर्मा*
मधु गुप्ता*

v v v

आईटी सलाहकार सोनू श्रीवास्तव*
नवीन कानूनगो*

v v v

ब्यूरो चीफ रमन सैनी* (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र)

v v v

संवाददाता दीपक कृष्ण नंदन*
ईशा चौधरी*

v v v

अकादमिक सलाहकार डॉ. सुधीर सोनी*

v v v

बिजनेस हैड अनुराग सोनी*
राजपाल सिंह*

v v v

कानूनी सलाहकार शिव कुमार अवार*

v v v

सर्कुलेशन मैनेजर आर.के. शर्मा* (मुम्बई)

v v v

परामर्श समिति

माला रोहित कृष्ण नंदन* अरविंद शर्मा 'अज़ान'*
डॉ. गीता कौशिक* बालकृष्ण शर्मा*
डॉ. रश्मि शर्मा* डॉ. मीना शर्मा*
डॉ. नीति मिश्रा* प्रकाश चन्द शर्मा*
राजकुमार शर्मा*

v v v

संरक्षक मंडल रामेश्वरी देवी*

v v v

डिजाइनिंग सागर कम्प्यूटर 79765-17072

v v v

मुद्रण कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स 9024765603

पृष्ठ संख्या : 32 आवरण सहित
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह की 01 तारीख

: कार्यालय :

50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

ई-मेल :
mahisandesh31@gmail.com

मोबाइल : 9887409303

पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

नाम के आगे अंकित (*) चिह्न अवैतनिक है।

हम सभी बोलें प्रेम की भाषा

रोहित कृष्ण नंदन
प्रधान संपादक
माही संदेश
mahisandesheditor@yahoo.com

सभी प्रेम की परिभाषा ही समझते हैं, ऐसा कौन है भला जो प्रेम करना नहीं चाहता, प्रेम तो वो वरदान है जिससे हर दान मुखरित होता है। जब हम इस ज़िंदगी में परिवार से दोस्तों से हर चीज बांट सकते हैं तो क्या प्रेम नहीं बांट सकते हैं, यही वह चीज है जो बांटने से कई गुना हमारे पास वापस आती है। कोई भले आपसे गुस्से में बात करे बस आप प्रेम से मुस्कराकर देखिए यकीनन आप उस गुस्से में प्रेम प्रवाहित करने वाले माध्यम बन जाएंगे। सब्जी में नमक कम है जोर से नहीं हौले से बोलिए प्रेम में घोलकर जो शब्द हमारे मुंह से निकलेंगे वो इस स्नेह की ऊर्जा को बढ़ाएंगे। आइए हम प्रण लें कि प्रेम बांटेंगे फिर देखिए ये कुदरत आपको कितना दुलार करती है। कुछ समय इस ज़िंदगी की भागदौड़ से निकलकर अपनों के लिए और अपने सपनों के लिए निकालिए। रेत की तरह समय फिसलता है यकीन मानिए जो बीत गया उसे वापस तो नहीं लाया जा सकता लेकिन जो हमारे हाथ में है उसे और बेहतर बनाया जा सकता है ये हमारे हाथ में है। समय सभी को बराबर मिला है फिर हम क्यों उसे व्यर्थ में नष्ट करते हैं, समय के अर्थ को जानें हर घड़ी इसलिए कीमती है कि वो वापस नहीं आती लेकिन जिस प्रेम को आप बांटते हैं वह आपके साथ आपके बाद हमेशा इस धरा पर रहता है। आज भी राधा कृष्ण का नाम प्रेम के कारण ही तो अमर है, राम सीता का आदर्श रूप प्रेम ही तो है, भगत सिंह का भारत मां के प्रति प्रेम आज भी ज़िंदा है, गालिब की कलम से निकले शेर आज भी हर दिल में प्रेम बनकर धड़कते हैं, जब देश के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के भाषण और कविता आज भी लोगों के दिलों में जिंदा हैं ये प्रेम ही तो है। प्रेम तो वो रूप है जिसमें हर रूप विद्यमान है। आइए हम ज़िंदगी को प्रेम का प्रतिमान बनाएं। अपनों के लिए कुछ प्रेम के पल निकालें क्योंकि आज की भागदौड़ भरी समस्याओं का हल बस प्रेम ही है तो आज प्रण करें हर पल आपस में प्रेम बांटेंगे।

शेष फिर.....

एक नज़र यहां भी

प्रेम के रंग
बढ़ती 'सभ्यता', घटता प्रेम — **अभिषेक यादव** — 6
आयोजन
'जेएलएफ' की अभूतपूर्व सफलता बनी सरकार की आंख की किरकिरी — **राजेन्द्र सिंह गहलोत** — 7
प्रीत की रीत
प्रेम की अभिव्यक्ति — **वर्तिका अग्रवाल** — 8
उत्सव
'जिफ' के मैदान में खूब उड़ी 'जयपुर फिल्म मार्केट' की पतंग — **राजेन्द्र सिंह गहलोत** — 9
कथा संदेश
टीस! — **'विजेता सूरी रमण'** — 11
प्रेरणा
मौज कर, रोज कर, नहीं मिले तो खोज कर-ओमप्रकाश मोदी — **रोहित कृष्ण नंदन** — 12
दिल की पसंद
वेलेंटाइन डेट पर इन खूबसूरत ड्रेस ऑप्शन्स से लड़कियां पाएं ग्लॉर्जियस लुक — **अदिति शर्मा** — 14
शब्द-संसार
पहली नज़र — **मोनिका शर्मा** — 16
प्रेम पथ
विशुद्ध प्रेम — **डॉ. नीना छिब्बर** — 17
प्रेम — **माला रोहित कृष्ण नंदन** — 17
किताबों की दुनिया
नीरज गोस्वामी की कलम से — **नीरज गोस्वामी** — 18
मन की बात
एक लड़की थी... — **तान्या सिंह** — 19
प्रेम की कमी से
'एनिमिक' हो जाती हैं 'स्त्रियां' — **मीना परमार** — 19
काव्य-कलम — 20-25
प्रेम की पाती
बिटिया के नाम प्रेम भरा पत्र-खुशी के मायने — **सुरेश चंद्र** — 26
सिनेमा संदेश
'ऋतु आए ऋतु जाए सखी री' - निम्मी — **शिशिर कृष्ण शर्मा** — 27

आवरण चित्र - राजेश कुमार सोनी*

भारतीय जीवन बीमा निगम, जयपुर में प्रशासनिक अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं व पिछले पांच वर्ष फोटोग्राफी कर रहे हैं। इनके द्वारा ली गई तस्वीरें जीवन के विभिन्न रूपों को जीवंत करती हैं।

'माही संदेश' में विज्ञापन दें

एक स्वाभाविक प्रश्न जो मन में आता है कि आप 'माही संदेश' मासिक पत्रिका में विज्ञापन क्यों दें.....तो इसके लिए आपके पास बहुत से कारण हैं..जैसे,

वर्तमान में युवा पीढ़ी साहित्य की ओर बहुत तेजी से आकर्षित हो रही है और 'माही संदेश' पत्रिका में साहित्य, समाज और जीवन के विभिन्न पक्षों पर सर्वाधिक बल दिया गया है और इसका प्रकाशन अनुभवी साहित्यिक व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है जिससे युवा पीढ़ी व समाज के विभिन्न वर्गों तक आप सहज ही पहुंच सकते हैं।

हमारे साथ जुड़े विभिन्न सामाजिक संगठन एवं संस्थाओं, सरकारी कार्यालयों में 'माही संदेश' मासिक पत्रिका निरंतर पहुंच रही है। जिससे आपका विज्ञापन हर आयुवर्ग के व्यक्ति तक पहुंच पायेगा।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका गुणवत्ता युक्त पाठ्य सामग्री को समेटे हुए हैं जिससे इसका एक व्यापक पाठक वर्ग है। विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के विशेष कवरेज के कारण निश्चित रूप से हमारे साथ आप भी शीघ्रता से निरन्तर आगे बढ़ेंगे ऐसा हमारा प्रयास और विश्वास है।

खोखले दावों के विपरीत वास्तविकता के धरातल पर हम आपका हमारे साथ जुड़ने पर स्वागत करते हैं।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका विज्ञापन दर

पत्रिका का कवर पृष्ठ	₹ 1,00,000
सामने के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 30,000
पीछे का कवर रंगीन	₹ 80,000
पीछे के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 30,000
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम पृष्ठ	₹ 10,000
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम आधा पृष्ठ	₹ 5,100

संपादक
माही सन्देश
खाता संख्या
37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार,
हीरापुरा, जयपुर
पेटीएम-9887409303
दूरभाष- 9828673031

माही संदेश

हिन्दी पत्रिका के सदस्य बनें

: कार्यालय :

माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर (राजस्थान)।

सदस्यता शुल्क

दो वर्ष : ₹ 800
पंचवर्षीय : ₹ 2000
आजीवन : ₹ 11000

चेक **'Mahi sandesh'** (माही संदेश) के नाम से देय एवं रेखांकित होना चाहिए। **रजिस्टर्ड डाक से प्रति मंगवाने पर (प्रति वर्ष 250/- रुपए) अतिरिक्त देय डाक खर्च शुल्क भेजें।**

भवदीय,
'रोहित कृष्ण नंदन'
संपादक : 'माही सन्देश'
खाता संख्या : 37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार, हीरापुरा, अजमेर रोड, जयपुर
पेटीएम-9887409303

लिखते हैं तो स्वागत है...

अगर आप कविता, लघु कथा या सामाजिक विषयों पर लिखते हैं तो आप अपनी लेखन सामग्री हमें अपनी तस्वीर व पते के साथ ईमेल या डाक के माध्यम से भेज सकते हैं। चुनी हुई रचनाओं को माही संदेश के आगामी अंकों में प्रकाशित किया जाएगा।

डाक का पता - संपादक, माही संदेश
50-51 ए, कनक विहार, एसबीआई बैंक के पास, हीरापुरा, अजमेर रोड़, जयपुर पिन-302021 राजस्थान
ईमेल-
mahisandesh31@gmail.com
Mob. & whatsapp - 9887409303

दो मीठे बोल रखेंगे सदियों तक ज़िंदा...

सुधीर माथुर
संरक्षक-सलाहकार
माही संदेश
mathursudhmat@yahoo.co.in

प्रेम जीवन को जोड़ता है। इस कुदरत को ही देखिए बिना किसी आशा और अभिलाषा के हमें अपना बेपनाह प्रेम देती है, सही मायने में प्रेम की परिभाषा यही है। पेड़ के पत्ते भी प्रेम के वशीभूत होकर ही मुस्करा उठते हैं, प्रेम के कारण ही पक्षी पेड़ पर बसेरा करते हैं। कल्पना कीजिए अगर प्रेम इस धरा पर न रहे तो क्या होगा? सही मायनों में अगर इस बात का जवाब खोजा जाए तो एक ही निष्कर्ष निकलकर सामने आएगा कि प्रेम के बिना जीवन संभव नहीं। कड़वी बातें बोलना भूल जाइए जिस तरह हम अपनी जीभ पर कड़वा स्वाद नहीं रख सकते तो सोचिए भला हम कड़वी बात भी कैसे बोल सकते हैं। प्रेम के रस में डूबी हुई बात हर मुश्किल हर परेशानी का हल है। बेजुबान जानवर भी हमसे प्रेम की अपेक्षा करते हैं आप उन्हें दो पल प्रेम के देकर देखिए ये बेजुबान जानवर आपको अपनी पूरी ज़िंदगी प्रेमपूर्वक सौंप देंगे, जब ये बेजुबान जानवर प्रेम का ये प्रतिफल दे सकते हैं तो क्या हम प्रेम का आचरण ज़िंदगी भर नहीं कर सकते। उलझनें किसकी ज़िंदगी में नहीं होतीं, प्रेम सब उलझनों का हल है, ज़िंदगी को प्रेम से जीना सीखिए आपकी उलझनें खुद ब खुद कम हो जाएंगी। इस जीवन में अगर आप कुछ जीतना चाहते हैं तो आप दिलों को जीतिए। आपकी अच्छाई ही आपकी पहचान जमाने से कराएगी, आपके कर्म ही आपको सबसे अलग बनाते हैं, मुस्कान के साथ अपनी ज़िंदगी की हर सुबह का स्वागत कीजिए। आप अपनी ज़िंदगी बेहतर जीएंगे तो आपसे जुड़ी कई ज़िंदगियां बेहतर बनने की तरफ अग्रसर होंगी। आपके द्वारा बोले गए दो मीठे बोल सबके दिलों में आपको सदियों तक जिंदा रखेंगे...तो ऐसे बोल बोलने से भला किसे परहेज होगा।

सुधीर माथुर

बढ़ती 'सभ्यता', घटता प्रेम

अभिषेक यादव
राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी
मो. *9636510723*

बेतरतीब ढंग से जीवनयापन कर रहे अबोध लोगों में प्रेम होता है। इनमें से बीस-तीस-पचास लोगों का झुण्ड एकत्र होकर साथ खाने साथ रहने लगता है-'सभ्य' बनने के लिए। बस यहीं से सभ्यता की कहानी शुरू होती है। समय के साथ-साथ विकास के सभी संकेतकों में कुछ सकारात्मक कुछ नकारात्मक परिवर्तन होने लगते हैं। इन सभ्य लोगों को ये महसूस होने लगता है कि उनके अलावा दुनिया के अन्य भूभाग में बसे हुए लोग अब भी जानवर या असभ्य ही हैं, महानता का ये भ्रम नफरत पैदा कर देता है। अब इन सभ्य लोगों की भी आबादी बढ़ने लगती है और इनमें से भी कुछ एक को लगता है वो इन सभ्य लोगों में भी विशेष सभ्य की श्रेणी में है जबकि दूसरे अपेक्षाकृत कम सभ्य हैं। अब इनमें भी विभाजन होने लगता है।

विभाजन के विभिन्न स्वरूप अंतत: कई चरणों से गुजरते हैं और परिणाम के रूप में सामने आते हैं-कई देश, धर्म, संप्रदाय, जाति और वर्ग। श्रेष्ठता और महानता में महीन अंतर इतना बढ़ता जाता है कि एक ही धर्म में कई शाखाएं और जाति के बाद उपजाति भी अस्तित्व में आने लगती हैं। ऊँच-नीच की व्यवस्था को न्यायसंगत रखने के लिए ये उपविभाजन भी अपरिहार्य हो जाता है। हालाँकि ये उपविभाजन करते समय भी धर्म-विशेष के प्रबंधक ये तथ्य ध्यान में रखते हैं कि दूसरे धर्म से टकराव के समय इन्हीं निम्नीकृत लोगों का धर्म की महानता और एकता स्थापित करने में प्रयोग किया जाये।

खैर श्रेष्ठता का दम्भ बरकरार रखना है तो कुछ मानदण्ड भी स्थापित करने होंगे जो मनुष्य को प्रेम नहीं अपितु विभाजन की ओर ले जा सकें। जैसे सच्चा हिन्दू ये नहीं करता सच्चा हिन्दू वो नहीं करता, सच्चा मुसलमान ये नहीं करता इत्यादि-इत्यादि। धर्म ग्रन्थ रामचरितमानस के अनुसार रामराज्य वो है जिसमें राज्य के सभी तत्वों में समन्वय स्थापित रहे-इसमें तो विभिन्न धर्मों की समानता का उपदेश है, तुलसी जाति व्यवस्था को नकारते हैं, मस्जिद में सोने की भी बात करते हैं। ये सब नर-वानर के मध्य समानता के साथ पराकाष्ठा तक पहुँचता है। पर आज तो ये समन्वय गायब नजर आ रहा है। इस्लाम में त्याग और कुर्बानी का विशेष महत्व है, हिंसा वर्जित है। लेकिन कट्टरता की छाया में प्रेम की ये तस्वीर नजर नहीं आती।

बदली हुई तस्वीर कुछ निष्कर्ष पेश करती है साथ ही कुछ यक्ष-प्रश्न भी खड़े करती है जिनके जवाब आगत के गर्भ में हैं। निष्कर्ष ये है कि अपने सिद्धांतों को मनवाने के लिए खूनखराबा करने वाला सच्चा हिन्दू नहीं है, धर्म के नाम पर आतंक फैलाने वाले सच्चे मुस्लिम नहीं हैं, अपने धर्म को विस्तार देने के लिए जबरन धर्मान्तरण करने वाले सच्चे ईसाई नहीं हैं, अपने धर्म को थोपने के लिए हिंसा करने वाले सच्चे बौद्ध नहीं हैं। अन्तत: प्रश्न ये उठता है कि क्या सच्चे हिन्दू, ईसाई, जैन, बौद्ध, जैन, मुस्लिम इस दुनिया से गायब हो चुके हैं? जिन धर्मों के तथाकथित अस्तित्व के लिए खूनखराबे का रास्ता अख्तियार किया जा रहा है क्या उनका अस्तित्व मिट चुका है? अगर ऐसा नहीं है तो धर्म के वास्तविक स्वरूप को जानने वालों-मानने वालों को खोजना और धर्म, सभ्यता, देश की स्थापना के मानवीय हितों को साधने वाले प्राथमिक उद्देश्यों की प्राप्ति भी बड़ी चुनौती बनकर धर्मज्ञों और राजनीतिज्ञों के सामने जीवंत है। आज नहीं तो कल इन धर्मों और उनको मानने वालों की खोज करनी ही पड़ेगी अन्यथा सभ्यताओं की भांति ये भी अवशेषों में ही वर्तमान रहेंगे। इतना न होने पर नरसंहार को नकारकर मानव हित में 'असभ्य' बना रहना ही अच्छा होगा। हमें समझना होगा धर्म और विकास की ये यात्रा मानव के लिए है, मानव इनके लिए नहीं जिससे हम सभी प्रकार के भेद से परे प्रेम के रंग में रंगकर मनुष्यता के किरदार के साथ न्याय कर सकें।

'जेएलएफ' की अभूतपूर्व सफलता बनी सरकार की आंख की किरकिरी

राजेन्द्र सिंह गहलोत
स्वतंत्र पत्रकार
rajendra.gehlot0086@gmail.com

जेएलएफ के प्रोड्यूसर संजॉय के. राय ने एकदम सही कहा कि जेएलएफ की कहानियों को जेईसीसी में नहीं कहा जा सकता, यह फेस्ट के साथ जस्टिस नहीं होगा।

अभी 17 से 21 जनवरी तक जयपुर में सफलता के नये आयाम स्थापित करता जयपुर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल (जिफ) का 12वां संस्करण सम्पन्न हुआ और 23 से 27 जनवरी तक जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल (जेएलएफ) का 13वां संस्करण आयोजित हुआ। यह एक संयोग ही कहा जायेगा कि जिफ का 12वां संस्करण सम्पन्न हुआ और जेएलएफ का 13वां संस्करण आयोजित हुआ और दोनों समारोह का प्रथम अक्षर 'जयपुर' है। 'जिफ' ने शुरू किया 'जेएफएम' यानि जयपुर फिल्म मार्केट, उसका भी प्रथम अक्षर 'जयपुर', यानि सफलता की गारंटी के लिये जयपुर का बड़ा महत्वपूर्ण रोल साबित हो चुका है। इसके साथ ही कम से कम 12-13 साल का समारोह आयोजित करने का अनुभव तो होना ही चाहिये।

मैं दोनों ही कार्यक्रमों का साक्षी रहा हूँ और दोनों ने ही सफलता के नये आयाम गढ़े हैं इसमें कोई दो राय नहीं है और इन जैसी सफलता की चकाचौंध से प्रेरित होकर शुरू किये गये अन्य फेस्टिवल शैशवावस्था में मानो कोटा के जेकेलोन अस्पताल में भर्ती हों, जहाँ उनकी अकाल मृत्यु अवश्यभांवी है और जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल की प्रेस टेरेस पर जैसे अचानक मेरी आंखों के सामने साकार हो गये जनसेवक अशोक गहलोत राज्य के मुख्यमंत्री, जो मानो कह रहे हों कि 'बच्चे तो मरते ही रहते हैं इसमें कौनसी बड़ी बात है।'

जनसेवक अशोक गहलोत इसलिये भी याद आये क्योंकि इस बार संयोग से या जानबूझ कर दोनों ही समारोह के उद्घाटनकर्ता अशोक गहलोत थे, उद्घाटनकर्ता होने का मजा ले लिया लेकिन खजाना खाली होने के कारण 30 लाख रूपये की स्पॉन्सरशिप की बात तो हाल-फिलहाल छोड़ ही दो, 500 रुपये की एंट्री फीस के समारोह में मुफ्त में अपने लवाजमे के साथ आकर अपने खजाने से एक रूपया देने में भी असमर्थ रहे, यहाँ तक कि आशीर्वाद भी नहीं दिया, माना कि उनके अनुसार सरकार गरीबी हालत में है, खजाना खाली है, पैसा नहीं है, राज्य कर्मचारी तक महंगाई भत्ते के लिये तरस रहे हैं, तो कोई बात नहीं, लेकिन हमेशा की तरह अगले साल भी जेएलएफ डिग्गी पैलेस में ही होगा यह आशीर्वाद तो दे दिया होता, लेकिन कहते हैं गरीब आदमी का मन भी गरीब हो जाता है, असल में जैसा कि बहाना बनाया जा रहा है यातायात की समस्या का, तो यातायात की समस्या कोई समस्या ही नहीं है, कुम्भ के मेले में लाखों लोगों की भीड़ रहती है, तब उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ यातायात का सुगम संचालन कैसे करवाते हैं, उनसे इस पर विचार विमर्श किया जा सकता है, राय ली जा सकती है, अगर दम्भ इसकी इजाजत नहीं देता तो नकल की जा सकती है।

जेएलएफ के प्रोड्यूसर संजॉय के. राय ने एकदम सही कहा कि जेएलएफ की कहानियों को जेईसीसी में नहीं कहा जा सकता, यह फेस्ट के साथ जस्टिस नहीं होगा। लेकिन संजॉय के. राय शायद सरकारी ढर्रों को नहीं जानते, सरकारी मशीनरी से परिचित नहीं हैं, यहाँ जस्टिस होता ही नहीं है, उनके लिये तो गधे और घोड़े दोनो एक समान होते हैं, यही यहां की कला एवं संस्कृति का निचोड़ है कि अंधा बांटे रेवड़ी, फेर फेर अपने को ही देवे।

दोनों ही समारोह से कला एवं संस्कृति मंत्री बी.डी. कल्ला गायब रहे, क्योंकि अब उनके अनुसार पूरे राजस्थान

में कला एवं संस्कृति का एक ही केन्द्र है 'जवाहर कला केन्द्र, जयपुर', अगर ये दोनों समारोह जवाहर कला केन्द्र में होते तो वह जरूर आते, क्योंकि खजाना खाली है तो राज्य की कला एवं कलाकारों को सरकारी खर्चे पर प्रदेश से या देश से बाहर ले जाकर कला एवं संस्कृति का विकास तो किया नहीं जा सकता, जो कि वास्तव में होना चाहिये, तो जवाहर कला केन्द्र के नाम पर नकली सफलता गढ़ने में कोई हर्ज नहीं है, लेकिन यह ध्यान रखा जाना चाहिये कि आज की तारीख में सफल 'जिफ' और 'जेएलएफ' है, नकल करने वाले तो जवाहर कला केन्द्र के सरकारी अस्पताल के आईसीयू में हैं और मंत्री जी का कभी भी अधिकृत बयान आ सकता है कि शैशवावस्था के समारोह तो मरते ही रहते हैं, इसमें कौनसी बड़ी बात है।

खैर सरकारी असफलताओं के बीच सफलता की कहानी चल रही है तो जिफ एवं जेएफएम के फाउंडर हनुरोज बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने इंटरनेशनल को-प्रोड़क्शन मीट का सफल आयोजन किया, जिसमें अमेरिका, अरमेनिया, जापान, ईरान, ग्रीस जैसे 25 देशों के फिल्मकारों ने भाग लिया और भारत, चीन, जापान के फिल्मकारों के बीच करोड़ों रूपये के बजट की फिल्मों के एमओयू हुए और अब कई फिल्मों के शूट भारत और राजस्थान में होने जा रहे हैं। जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में भी देश दुनिया के 550 स्पीकर्स ने सहभागिता की, 120 स्पीकर तो पुरस्कार विजेता हैं, जिन्होंने संविधान, जलवायु, कविता, कृत्रिम बौद्धिकता जैसे विषयों पर चर्चा की, और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों का जमावड़ा हुआ, और खजाना खाली वाले राज्य में वाणिज्यिक दृष्टिकोण से भी एक सफलतम आयोजन रहा, इसे अगले साल डिग्गी पैलेस में आयोजित होने में बाधा डालने का निर्णय समझदारी भरा नहीं कहा जा सकता। सिनेप्रेमी होने के कारण अचानक जैसे 'जनसेवक' फिल्म अभिनेता राजकुमार बनकर कल्पना में साकार हो गये जो *संजॉय के. राय से कह रहे हों 'जानी तुम्हारी सफलता का जुनून इस फेस्टिवल को मरने नहीं देगा और हम इसे जीने नहीं देंगे।'*

प्रेम की अभिव्यक्ति

फागुन का महीना चला गया। कृष्ण को भी अपने प्रिय साथियों, गोपियों, ग्वालों को छोड़े बहुत समय हो गया। किंतु यह जो मतवारी कोयल है, मौल श्री के घने वृक्ष में छिपकर मीठे गीत गाई जा रही है। एक सखी जो राधा की दशा से अवगत थी।

तस्वीर : अनुजीत इकबाल

क्रोधित होती है कुपित होती है कहने लगती है.. 'मतवारी कोयल! क्यों तू घड़ी-घड़ी गीत सुनाए ? ये गीत विरह के गीत हो गए हैं। जब कृष्ण थे.. तू गीत गाती थी और तेरे गीत बसंत राग ही तो गाते थे। तेरा कूक सुनकर राधा समझ जाती थी मिलन की बेला आने वाली है वो झट काम निपटा मधुबन में जाने के लिए खड़ी हो जाती थी। झट आँखो में काजल डाल अपने केश को पुष्प से गूँथ लेती थी।

अब आज यहाँ श्री कृष्ण नहीं, वो तो द्वारिका गए। राधा-रानी की दशा तो देखते नहीं बनती। श्री राधे ने रो-रो आँखो को सुजा लिया है और वो अश्रु जो नयनों से अश्रुधार में फूटे थे उसका तो अंत ही नहीं। तेरा ये गीत अब श्री राधे के लिए विरह -पीड़ा बन जाएगा। श्री राधे के काजल की डिबिया पर तो अब धूल की परत भी चढ़ चुकी है। वो दर्पण जिसमें श्री राधे श्री कृष्ण को देखती थी उसे भी अब नहीं देखतीं।

मत गा कोयल मतवारी। तू मत गा।
इतने में कोयल सखी से कहती है ,'तू पगली है।'
'हाँ मैं मतवारी हूँ पर तू तो पगली है।'

'देखो इन दो तितलियों को जो पुष्पों व फूलों पर बैठ बैठ..मेरे गीत से कैसे मंत्र-मुग्ध हो रहे हैं। जानती हो ये कौन है? ये राधा - कृष्ण की ही छवि हैं और देखो ये पुष्प के गुच्छे कैसे उलझे हुए हैं ये भी राधा कृष्ण ही हैं उनका मन आज भी इसी कुंज में है। वह नृत्य कर रहे हैं एक दूसरे को पकड़ रहे हैं। यह लताएं ..यह पत्तियाँ यह कबूतर-कबूतरी के जोड़े ,यह सब राधा-कृष्ण की छवि ही हैं और इन पौधों को देखो यह कैसे मंत्रमुग्ध हो रहे हैं ..यह गोपियां ही तो हैं। माना मैं मतवारी हूँ पर तू तो पगली है।' 'जय जय श्री राधे'।

वर्तिका अग्रवाल
बनारस (उत्तर प्रदेश)
agrawalvartika555@gmail.com

'जिफ' के मैदान में खूब उड़ी 'जयपुर फिल्म मार्केट' की पतंग

राजेन्द्र सिंह गहलोत
स्वतंत्र पत्रकार
rajendra.gehlot0086@gmail.com

फिल्म निर्देशक तिग्मांशु धूलिया ने एक सवाल के जवाब में जयपुर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल (जिफ)में कहा कि फिल्म शौक है, धंधा नहीं। बात सीधे तीर की तरह दिल में लगी और दिल ने कहा इसी तरह पत्रकारिता भी शौक है, धंधा नहीं, अगर पत्रकारिता धंधा होगा तो मैं भी औरों की तरह प्रेस विज्ञप्तियां ही छापूंगा, पत्रकारिता नहीं करूंगा, लेकिन धंधा करने के लिये तो दुनिया ही बहुत है, मैं तो अपनी पत्रकारिता के मजे ले रहा हूँ। इसी तरह फिल्म निर्देशक राकेश ओमप्रकाश मेहरा ने कहा कि हिन्दी सिनेमा खतरे में है, प्रादेशिक सिनेमा नहीं, क्योंकि बड़ी इंडस्ट्री में प्रोफेशनल तो होते है परंतु पैशन कम होता है। यहीं बात हर क्षेत्र में लागू है। बिजनेस ऑफ सिनेमा या पत्रकारिता, और पावर ऑफ सिनेमा या पत्रकारिता दोनों अलग चीजें हैं।

तो बात करते हैं जयपुर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल की, मुझे लगता है यह फेस्टिवल जरूर नेकनियति से शुरू किया गया होगा कि आज वह सफलता के नये आयाम स्थापित कर रहा है, और जिफ के नाम और काम की नकल करके जन्में कई फिल्म फेस्टिवल जहां से शुरू हुए, वहीं पहुंच गये और आज आईसीयू में अपनी अंतिम सांसें गिन रहे हैं।

जिफ 2020 जयपुर के जीटी सेन्ट्रल में आयोजित किया गया, जिसकी ओपनिंग सेरेमनी महाराणा प्रताप सभागार में आयोजित की गई, जिसमें मुख्यमंत्री अशोक गहलोत मुख्य अतिथि एवं पर्यटन मंत्री विश्वेन्द्र सिंह विशिष्ठ अतिथि थे। जाने माने फिल्म अभिनेता प्रेम चौपड़ा को एवरग्रीन स्टार एचीवमेंट अवॉर्ड से नवाजा गया। जब मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और पर्यटन मंत्री विश्वेन्द्र सिंह ने प्रेम चौपड़ा की फिल्में देखने के अपने पुराने अनुभव साझा किये तो प्रेम चौपड़ा ने कहा 'सारी दुनिया जानती है मैं कितना शरीफ आदमी हूँ, नाम है मेरा प्रेम, प्रेम चौपड़ा', तो सभागार ठहाकों से गूंज उठा।

जिफ के फाउंडर हनुरोज की तारीफ की जानी चाहिये कि उन्होंने ओपनिंग फिल्म के रूप में राजस्थानी फिल्म चिड़ी बल्ला को चुना जो राजस्थान के प्रति उनके प्रेम को दर्शाता है, इसके बाद जिफ में 69 देशों की 240 फिल्मों का प्रदर्शन हुआ, जिसमें मैंने स्पेशल स्क्रीनिंग के तहत वी. शांताराम की फिल्म 'पड़ौसी' का आनंद लिया। मैं अन्य फिल्मों का भी आनंद लेता क्योंकि मैं फिल्म प्रेमी के साथ ही फिल्म समीक्षक भी हूँ, लेकिन इस बार जिफ के फाउंडर हनुरोज ने होटल क्लार्क्स आमेर जयपुर में जयपुर फिल्म मार्केट का भी आयोजन किया था, जिसमें देश दुनिया से आये फिल्म वितरक, निर्देशक और निर्माताओं ने हिस्सा लिया, जिसमें फाउंडर हनुरोज और जयपुर फिल्म मार्केट की डायरेक्टर प्रज्ञा राठौड़ ने बताया कि इस फिल्म मार्केट से राजस्थान में फिल्मों की शूटिंग बढ़ेगी जिससे पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान की कला, संस्कृति और पर्यटन को पहचान मिलेगी, इस फिल्म मार्केट का एक प्रयास फिल्मकार और पर्यटकों के बीच राजस्थान की जड़ों से जुड़ाव महसूस कराना है, जिससे वे यहां आएं और राजस्थान उनको कहे 'पधारो म्हारे देस।'

'पधारो म्हारे देस' की कल्पना को साकार करने के लिये कई सेशन्स आयोजित किये गये जिससे यह बात छनकर आये कि इसे किस तरह साकार किया जाये और क्या बाधाएं हैं। तो यह बात निकलकर सामने आई कि ग्राहक यानि दर्शक पायरेसी को सपोर्ट करेगा अगर उसे सिनेमाघर नहीं मिला तो, और महंगी टिकिट रही तो, मल्टीप्लेक्स सिनेमाघर तो फाईव स्टार होटल्स की तरह है, उनका कहना है कि हम आपको फिल्म देखने का अच्छा अनुभव दे रहे हैं तो आपको उसकी ऊंची कीमत चुकानी ही पड़ेगी, अगर आपको कम पैसों में खाना चाहिये तो ढ़ाबे पर खाना खाईये यानि सिंगल स्क्रीन सिनेमाघर। बात तो यहां तक निकलकर आई कि दर्शकों के लिये दक्षिण भारत की तरह 75 रूपये से अधिक की टिकिट न हो तभी आम दर्शक पहले की तरह फिल्मों से जुड़ाव महसूस कर पायेंगे वरना अभी महंगी टिकिटों को देखते हुए आम दर्शक थियेटर से दूर हो रहा है, क्योंकि मल्टीप्लेक्स थियेटर तो धनाढ्य वर्ग के थियेटर बनकर रह गये है, इसलिये गैरकानूनी होते हुए भी दर्शक मजबूरी में पायरेसी को सपोर्ट कर रहे हैं।

हालांकि सेशन्स में इसका समाधान भी निकलकर सामने आया कि इन बाधाओं को दूर करने के लिये अधिक से अधिक एकल सिनेमाघरों का निर्माण हो जिससे वहां अधिकतम 75 रूपये में फिल्म रीलिज होते ही तत्काल उसी दिन दिखा दी जाये, इसके अलावा राजस्थान में शूटिंग के लिये बहुत सारी समस्याएं हैं, किसी को भी किसी तरह की समस्या न हो, इसके लिये अलग से पॉलिसी बनाई जाये, सिंगल विंडो सिस्टम लागू किया जाये, इन सबके लिये विभिन्न प्रकार की सरकार की ओर से अधिकतम रियायतें दी जायें।

राजस्थानी फिल्मों के बारे में यह सामने आया कि राजस्थानी फिल्मों को बढ़ावा देने के लिये सर्वप्रथम हमें अपनी भाषा पर गर्व करना पड़ेगा, आज भी बंगाल की मुख्यमंत्री अपने प्रदेशवासियों से बंगाली में बात करती है, गुजरात का मुख्यमंत्री गुजराती में, लेकिन राजस्थान का मुख्यमंत्री आज भी इसका अपवाद है, राजस्थान ऐसा प्रदेश है जहां अपनी भाषा का कोई बड़ा अखबार तक नहीं निकलता, शायद यही कारण है कि सावन कुमार टांक, के.सी.बोकाड़िया, राजश्री जैसे नामी प्रोडक्शन ने राजस्थान के होते हुए भी राजस्थानी फिल्मों के निर्माण से किनारा किया। और जो फिल्मकार राजस्थानी फिल्में बनाते हैं वह तकनीकी स्तर पर बड़ी कमजोर फिल्में होती हैं, उनके पास कोई अपनी विषय वस्तु नहीं है, इसीलिये फायनेंस भी नहीं है, सरकारी स्तर पर जिस राशि की सहायता दी जाती है वह राशि ऊंट के मुंह में जीरा है और वह जीरा भी सभी को नहीं मिलता, सिर्फ अपने-अपने चहेते ऊंटों को मिलता है, इसके अलावा राजस्थानी सिनेमा को थियेटर उपलब्ध कराने की बाध्यता में साफ तौर पर राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव प्रतीत होता है।

इसके अलावा वर्ल्ड सिनेमा बाय विमन सेशन में सिटी भास्कर की न्यूज एडिटर प्रेरणा साहनी ने मॉडरेट की भूमिका निभाई और इस सैशन में जब पत्रकार एवं लेखक, जिनके उपन्यास अग्नि की लपटें पर आधारित फिल्म 'पद्मावत' संजय लीला भंसाली ने बनाई, तेजपाल सिंह धामा ने चर्चा के दौरान इस आशय का वक्तव्य दिया कि 'पद्मावत' में अपनी आबरू बचाने के लिये पद्मावती ने जौहर किया, वह नारी की गरिमा का प्रतीक है, इस पर मंच पर आसीन महिलाओं ने जौहर को गलत बताते हुए रेप को केवल एक्सीडेन्ट की तरह लेने की बात कही। तब लगा वाकई नारी महान रही है हमेशा ही, पद्मावती ने जौहर किया तब भी, क्योंकि पदमावती को वह सही लगा, और अब भी जब मंच पर आसीन महिलाओं ने रेप को एक्सीडेन्ट की तरह लेने की बात कही। इनकी बातों से लगा वाकई नारी अब शरीर से ऊपर उठ चुकी है, इसके लिये प्राण देने की आवश्यकता नहीं, शरीर से मोहभंग होना ही अध्यात्म सिखाता है।

लब्बोलुआब यह रहा कि जिफ और जेएफएम के फाउंडर हनुरोज बधाई के पात्र है कि वह राजस्थानी फिल्मों और राजस्थान की कला, संस्कृति एवं पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये प्रयासरत हैं वह भी नेकनियति के साथ, शायद इसीलिये सभी उनकी सफलता की कामना करते हैं क्योंकि अभी तो पार्टी शुरू हुई है।

टीस!

विजेता सूरी 'रमण'
मुंबई (महाराष्ट्र)
vijaytasuri4@gmail.com

जबसे अखबार में पुलकित की तस्वीर देखी थी.. मन में उसकी यादें फिर से हिलोरें मारने लगी थी। यह अधूरा प्यार है या नफरत आज तक वो समझ न पाई थी।

बचपन से एक ही मोहल्ले में पले बढ़े एक साथ पढ़े.. दोनों परिवारों में भी गजब का प्यार सौहार्द्र। हमेशा एक दूसरे के दुख सुख में एकसाथ..लोग मिसाल देते थे दोनों परिवारों की.. ऐसा बंधन। जब तक एक दूसरे के घर हर रोज आना जाना न हो पुलकित व मधु को चैन ही नहीं पड़ता था।

पुलकित सी. ए. की तैयारी कर रहा था और मधु भी प्रशासनिक अधिकारी बनना चाहती थी। दोनों ही पढ़ने में अव्वल थे हमेशा किसी न किसी विषय को लेकर दोनों में खूब चर्चा होती बहस होती और कभी कभी तो झगड़े का रूप भी ले लेती... और फिर रूठने मनाने का दौर चलता। इस तरह जिंदगी बेहद खुशनुमा गुजर रही थी कि एक दिन पुलकित को न जाने क्या सूझी अचानक से हाथ पकड़ कर बोला, 'मधु तुम मेरी जीवनसंगिनी बनोगी'।

'क्या'?

'तुमने ऐसे सोच भी कैसे लिया'?

'हम केवल अच्छे मित्र हैं'।

'ओह!...तुम भी आम लड़को की तरह आवारा ही निकले न ..थोड़ा सा तुम संग हँस बोल लिया तो शादी के सपने संजो लिए'... उसके मुंह में जो आया वो सुना दिया।

असल में वो खुद बेहद ड़र गई थी कि माँ बाबूजी क्या सोचेंगे.. लोग क्या कहेगें?

इतनी खरीखोटी सुनकर पुलकित भीतर तक आहत हो गया था। वो हक्का

बक्का सा चेहरे पर ..असमंजस के भाव लिए अपलक उसे देख रहा था। शायद उसे इस तरह के उत्तर का रत्ती भर भी अंदाजा न था। फिर अचानक से वो आगे बढ़ा दो पल के लिए उसे गले से लगाया व उसके माथे को चूम तेजी से बाहिर की ओर निकल गया। वह कुछ समझ न पाई जड़वत सी खड़ी उसे जाते हुए देखती रही।

उस रात को वो आज तक नहीं भूल पाई। एक पल के लिए वह सो न सकी थी।

अपने मन की बात किसी से कह भी नहीं सकती थी। रह रहकर मन घबरा उठता एक ही प्रश्न दिमाग में गूंजता रहा 'क्या उसने सही किया'?

अगले कई दिन तक पुलकित नजर नहीं आया था। माँ दो तीन बार कुरेद चुकी थी, 'तुम दोनों के बीच कोई झगड़ा हुआ है क्या'?

'नहीं तो.. बस एग्जाम सिर पर हैं उसी की तैयारी है'। अपने भावों को छिपाते हुए कह डालती।

सच तो यह था कि पुलकित के बिना जिंदगी एकदम नीरस सी हो गई थी.. किसी भी काम में मन न लगता हर वक्त आँखें दरवाजे की ओर लगी रहती।

फिर एक दिन दोपहर के समय घर की घंटी बजी। मैं तेजी से भागकर दरवाजा खोलने गई थी कि अवश्य पुलकित होगा वो इतने दिन मिले बिना रह ही नहीं सकता। परंतु सामने पुलकित के मम्मी-पापा हाथ में मिठाई का डिब्बा लिए खड़े थे। मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा उन्हें ड्राइंगरूम में बिठा मैं चाय बनाने चले गई.. तभी कानों में आवाज पड़ी कि पुलकित की शादी तय हो गई है। सुनते ही ऐसा लगा था मानो किसी ने मेरे कलेजे को मुट्ठी में रखकर जोर से भींच दिया हो.. दिल न जाने कितने टुकड़ों में टूटकर किरच किरच बिखर गया था। ऐसे लग रहा था मानो दो पल में ही मेरी सारी दुनिया वीरान हो गई हो। शादी भी अगले ही सप्ताह लखनऊ में थी।

उसने अपने इंटरव्यू का बहाना बनाकर शादी में जाने से इंकार कर दिया था.. सब हैरान थे।

रह-रह कर पुलकित की छवि मेरे मानस पटल पर उभर आती। उसका निस्वार्थ प्रेम,वो अपनापन, घंटों बैठकर बाते करना, हमेशा उसके लिए फिक्रमंद रहना सब उसके दिल पर हथौड़े की तरह चोट कर रहा था। उसे उन दो मनहूस पलों पर आक्रोश आ रहा था।

काश! वो खामोश रहती।

काश! इस तरह जल्दबाजी में अपना फैसला न सुनाया होता।

काश! उसने यह बात माँ के समक्ष रखी होती।

तब क्या पता परिस्थितियाँ कुछ और होती। आवेग में आकर उसने यह क्या कर डाला। इस बात का पछतावा हमेशा मन में बना रहता।

यह तकलीफ तब और भी बढ़ गई थी जब कार्ड व डिब्बा थमाते हुए उन्होंने माँ को बोला था।

... शेष पृष्ठ 13 पर

मौज कर, रोज कर, नहीं मिले तो खोज कर-ओमप्रकाश मोदी

रोहित कृष्ण नंदन

जब बढ़े कदम

ओमप्रकाश मोदी का जन्म झुंझनूं राजस्थान में हुआ। अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए ओमप्रकाश मोदी कहते हैं कि स्कूल के दिनों में एक आना जेब खर्च के लिए मिलते थे, उस समय हमारे लिए एक आना बेशकीमती होता था। पढ़ाई के दौरान ही झंझनू में वर्ष 1972 में ही पाइप, आदि की दुकान खोली, इसके बाद वर्ष 1975 में ग्रेजुएशन पूरा किया। ओमप्रकाश मोदी के पिता स्व. रामअवतार मोदी भी समाज सेवा में सक्रिय रहे थे।

समाजसेवी ओमप्रकाश मोदी कहते हैं कि इन चार चीजों की हमेशा सहायता करनी चाहिए...

1- जो भूख से मर रहा हो उसे अन्न का दान
2- इलाज का अभाव- औषधि का दान
3- पढ़ने वाला बच्चा- शिक्षा के लिए दान
4- अब जो दान हम वर्तमान में देखते हैं वो दिखावा है

जब ऊपर की तीन चीजें हो जाएंगी या शिक्षा मिल जाएगी बाकी दो चीजें स्वत: ठीक हो जाएंगी...

व्यापार के साथ-साथ समाज सेवा में सक्रियता

मोदी कहते हैं कि वर्ष 1982 में अचानक पत्नी की तबीयत खराब होने के कारण चार महीनों तक जयपुर में ही रहना पड़ा, जब लगा कि यहां कुछ काम आरंभ करना चाहिए, टेंडर्स निकलते थे अखबार पढ़ता था इस कारण काम से काम मिलने लगा और फिर जयपुर में व्यापार आरंभ किया। व्यापार के दौरान ही समाज सेवा के कई कार्य करने का अवसर मिला जिनमें एक प्रमुख कार्य का दायित्व आज भी हम निष्ठापूर्वक निभा रहे हैं यह दायित्व है श्री श्याम महोत्सव सेवा समिति का कुशल संचालन-श्रीश्याम महोत्सव सेवा समिति की खास बात यह

है कि इसके संस्थापक अध्यक्ष ओमप्रकाश मोदी प्रारंभ से अब तक संस्था के निर्विरोध निर्वाचित अध्यक्ष हैं।

श्रीश्याम महोत्सव सेवा समिति

सामाजिक जीवन में अनेक लोग एवं संस्थाएं अपने-अपने दृष्टिकोंण से कार्य करते हैं। किंतु कुछ संस्थाएं अपनी विशिष्ट दृष्टि एवं शैली के कारण दिव्य हो जाती हैं। ऐसी ही एक संस्था है श्री श्याम महोत्सव सेवा समिति, नाम से स्पष्ट है कि संस्था के प्रेरणापुंज है शीश के दानी बाबा श्याम, हारे का सहारा बाबा श्याम का पावन स्मरण कर वर्ष 1994 में गुलाबी नगर जयपुर के झोटवाड़ा रोड़ स्थित खंडाका हाउस में भक्त शिरोमणी आनंदी देवी शारडा (मैया जी) के सान्निध्य में संस्था की स्थापना हुई। संस्था की स्थापना के समय ओमप्रकाश मोदी, बिमल सराफ, रामरतन नीरव, देवकी नंदन गोयनका तथा अशोक कुमार खेतान ने संकल्प लिया कि इस संस्था को भजन कीर्तन से आगे ले जाकर नर सेवा को ही नारायण सेवा स्वीकार करते हुए सामाजिक उत्थान के लिए कार्य करेंगे जो कि वर्तमान में जारी है। संस्था की स्थापना के समय आयोजित कार्यक्रम में यह भी तय किया गया बाबा श्याम के कार्यक्रमों में हो रहे दिखावे व फिजूलखर्ची को रोककर धन का मानव कल्याण हेतु सदुपयोग करने का प्रयास करेंगे।

संस्था के अध्यक्ष मोदी कहते हैं कि हमने स्वच्छ भारत अभियान को आगे बढ़ाते हुए 'स्वच्छ जयपुर-स्वस्थ जयपुर' थीम पर कार्य किया व अनवरत रूप से कार्य जारी है, भारत स्वच्छ होगा तभी स्वस्थ-सशक्त तथा समृद्ध होगा। स्वच्छता का विषय किसी एक जाति वर्ग समुदाय का नहीं है अपितु यह देश के प्रत्येक नागरिक का विषय है। शीश के दानी बाबा श्याम से प्रेरणा प्राप्त करने वाली इस संस्था ने लोगों को नेत्रदान एवं देहदान के लिए भी प्रेरित किया है। संस्था के प्रयास से अभी तक 100 से अधिक लोग नेत्रदान एवं 46 से अधिक लोग देहदान का संकल्प ले चुके हैं।

इस वर्ष 2020 में 100 बच्चों को कंप्यूटर शिक्षा में पारंगत करने की भी योजना है जिसमें विभिन्न स्कूलों के छात्रों का चयन कर उन्हें कंप्यूटर प्रशिक्षण दिया जाएगा।

क्रमशः पृष्ठ 11 से

'बहन जी ! हम बेहद शर्मिंदा हैं। अपने दिए हुए

वचन को निभा नहीं पाएं। हमारी तो हार्दिक इच्छा थी मधु हमारे घर की बहू बने। दोनों के बीच अच्छी समझ व दोस्ती भी थी। हम तो इस वर्ष मधु को रोकने का मन भी बना चुके थे। फिर भी न जाने कब पुलकित को अन्नया पसंद आ गई और एकदम से आनन फानन में शादी के लिए भी जिद ले बैठा।

हमने उसे समझाने का बहुत प्रयास भी किया परंतु आजकल की नई पीढ़ी कहकर उन्होंने ठंडी आह भरी थी। माँ ने बड़े टूटे मन से असहाय से स्वर में कहा था, 'जो भाग्य को मंजूर'।

उनका वार्तालाप सुनकर मेरा मन ज़ार ज़ार रो उठा था। मन चाह रहा था चीख चीख कर सबको बता दूं कि यह सब मेरी वजह से हुआ है। परंतु अब शादी तय हो चुकी थी.. उसने अपने मन के भावों को मन में ही दफन कर लिया था। अकसर दिल में एक टीस एक दर्द भरी पुकार उठती 'पुलकित अगर तुम्हें सच में मुझसे प्रेम था तो क्या तुम एक बार दोबारा बात नहीं कर सकते थे? क्या तूने इतना बड़ा फैसला लेने से पहले... एक बार भी मुझसे मिलना जरूरी नहीं समझा?

तुम अपना फैसला सुनाने ही आ जाते।

क्या तुम थोड़ा इंतजार नहीं कर सकते थे?

मैं तो नादान थी परंतु तुम..?

प्रेम में अहं कहाँ होता है?

बस यही एक बात गाँठ बाँध कर उससे नफरत कर ली थी।

कुछ दिनों बाद मेरी नौकरी भी बनारस में लग गई शीघ्र ही आलोक के साथ शादी भी हो गई। परंतु पुलकित को खो देने की टीस आज भी कहीं न कहीं दिल में कील की तरह चुभ ही जाती है।

वेलेंटाइन डेट पर इन खूबसूरत ड्रेस ऑप्शन्स से लड़कियां पाएं गॉर्जियस लुक

अदिति शर्मा
कानपुर (उत्तर प्रदेश)
aditikhediwal@gmail.com

प्रेमियों के लिए सबसे खास दिन 14 फरवरी यानि वैलेंटाइन डे दूर नहीं है। इस दिन के लिए लड़कियां ना जाने कितनी तैयारियां करती हैं ताकि वो अपने वैलेंटाइन को एक नजर में ही इम्प्रेस कर सकें और उन्हें अपना बना सकें। फिजाओं में मौजूद रोमांस से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते हैं। चाहे आप किसी रोमांटिक कैंडललाईट डिनर के लिए तैयार हो रहे हों या फिर घर पर पार्टी की अरेंजमेंट हो आप जरूर कुछ खास और स्पेशल दिखना चाहते हैं। यहां हम आपको बता रहे हैं आप कैसे इस विशेष दिन में खास लग सकती हैं।

डिनर और मूवी डेट

अगर आप किसी डिनर और मूवी डेट के लिए जाने वाली हैं और वेस्टर्न आउटफिट पहनने में कंफर्टेबल महसूस करती हैं, तो ऐसे में आप अपनी पसंद के मुताबिक, छोटी या बड़ी वन पीस या टू पीस कैरी कर सकती हैं, इसे आप लैदर या डेनिम जैकेट और लांग बूट के साथ कंप्लीट करें। आपका ये लुक सर्दी के मौसम में भी कैरी कर सकती हैं।

कॉफी डेट

आपको मिले हुए ज्यादा वक्त नहीं हुआ या समय की कमी की वजह से सिर्फ कॉफी डेट या आईसक्रीम डेट के लिए जाने वाली हैं, तो ऐसे में आप अपनी फेवरेट जींस को ऑफ शोल्डर टॉप या स्वेट शर्ट के साथ टीमअप करें। आपका ये कैजुअल लुक रिश्ते की शुरुआत को हल्का और स्ट्रेस फ्री बनाने का काम करेगा।

डेट एट होम

अगर आप वेलेंटाइन डे पर पार्टनर के घर जाने वाली हैं, तो ऐसे में आप एक लाइट वूलन स्वेटर को टाइट सिगरेट पैंट या लैंगिग के साथ पहनें। इसके साथ आप अपने लुक को नॉर्मल मेकअप और बालों को ऊपर की ओर एक टाइट बन बनाकर या बालों को खुला छोड़कर एक कैजुअल लुक बना सकती हैं।

पिकनिक या डे आउट

वेलेंटाइन डे के दिन अपने पार्टनर के साथ डे आउट का प्लान बना रही हैं, तो ऐसे में आप ऐसे कपड़ों का चुनाव करें जो स्टाइलिश होने के साथ ही कंफर्टेबल भी हों। आप जींस के साथ शर्ट या टी शर्ट को डेनिम या लैदर जैकेट और स्पोर्टस शूज के साथ पहनें या अगर आप इंडियन ड्रेस में कंफर्टेबल महसूस करती हैं, तो अपनी पसंद के मुताबिक लैगिंग कुर्ती या प्लाजो सूट ट्राई कर सकती हैं।

सरप्राइज डेट

आप अपने वेलेंटाइन डे को पार्टनर के लिए यादगार बनाना चाहती हैं, तो ऐसे में आप रेड कलर की शॉर्ट या नी लेंथ की फ्रॉक पहनें। ये वेलेंटाइन डे पर आपके लुक को परफेक्ट बनाने में मदद करेगी, लेकिन इस ड्रेस का चुनाव आप कंफर्टेबल फील करने पर ही करें वरना आप अपनी डेट को इंज्वॉय नहीं कर पायेंगी। आप इसके साथ अपने बालों को खुला छोड़ें और हाथ में एक रेड या गोल्डन कलर का ब्रेसलेट और एक हाथ में घड़ी कैरी करें, जबकि पैरों में हील और हाई हील पसंद के मुताबिक पहनें।

लाल रंग में दिलकश

वैलेंटाइन डे और बिना रेड कलर के कैसे पूरा हो सकता है। अगर आप प्योर रेड कलर अपनाना नहीं चाहती हैं तो जानवी कपूर से टिप्स लेकर देखें कि रेड कलर के साथ आप कैसे रॉक कर सकती हैं। मेसी बन के साथ सॉफ्ट कर्ल हेयरस्टाइल रखें साथ ही एक डेलीकेट एक्सेसरीज पहनें। इसके बाद तो श्योर है कि आपका समवन स्पेशल आपके ऊपर से अपनी नजरें ही नहीं हटा पायेंगे।

ज्वेलरी

इस दिन रेड कलर की ड्रेस पहनने वाली हैं, तो सिल्वर टच में डायमंड और जर्कन ज्वेलरी कैरी करें। इसके अलावा आप किसी भी ड्रेस के साथ हार्ट शेप पेंडेंट सेट पहन सकती हैं। ये लाइट वेटेड होते हैं, सिंपल और सोबर लुक देते हैं। अगर गले में कोई नेक पीस नहीं पहनना चाहती हैं, तो फिर कान में ईयररिंग्स और हाथ में ब्रेसलेट या कड़ा पहन कर भी खुद को अट्रैक्टिव लुक दे सकती हैं। इन दिनों बीड्स, पर्ल, जर्कन और एंटीक ईयररिंग्स, ब्रेसलेट चलन में है, इन्हें भी वैलेंटाइन-डे पर कैरी कर सकती हैं।

हेयर एसेसरीज

किसी भी स्पेशल ओकेजन के लिए जितना हेयर स्टाइल मायने रखता है, उतना ही हेयर एसेसरीज भी। अट्रैक्टिव हेयरस्टाइल के लिए हेयर बैंड या साइड पार्टिंग क्लिप का इस्तेमाल करें। इससे आपका वैलेंटाइन-डे लुक कंप्लीट हो जाएगा। आजकल स्ट्रेट हेयर्स का ट्रेंड है। अगर आपने बाल स्ट्रेट किए हैं, तो इन्हें खुला छोड़ दें, साइड में एक हेयर क्लिप का इस्तेमाल करें। हेयर बैंड का भी यूज कर सकती हैं। लेकिन ये मल्टीकलर या रेड कलर के हों, तभी ज्यादा जंचेंगे।

फुटवियर्स

वैलेंटाइन-डे के लिए ब्लैक-व्हाइट कलर के फुटवियर को प्रेफरेंस न दें। फुटवियर्स में खास तरह के कलर्स चूज करें, जैसे रेड, पिंक, यलो। हालांकि आपकी एसेसरीज के कलर आपके ड्रेसिंग स्टाइल से ही तय होते हैं, इसलिए इस बात का खास ध्यान रखें कि आपने क्या पहना है, उसी के अनुसार अपने फुटवियर के कलर को चुनें। फुटवियर में फ्लैट्स, हील, बैली को ज्यादा इंपॉर्टेंस दें।

पहली नज़र

मोनिका शर्मा
गुरुग्राम, (हरियाणा)
ईमेल-
monika.monika201583@gmail.com

सुलोचना देहरादून से पढ़ रही थी , सर्दियों की छुट्टियों में मम्मी पापा के पास आई। वहां ब्राह्मण समाज समिति की एक मीटिंग में जाना था। माँ ने ज़िद की 'सुलोचना तू भी हमारे साथ चलना'।

सुलोचना ने कहा 'मां मैं वहां जाकर क्या करूंगी? मां ने कहा 'अरे सब से मिलना और क्या? तू बड़ी भी तो हो गई है तेरी शादी नहीं करनी है क्या? सुलोचना ने हंसते हुए कहा तो तुम क्या मुझे दूल्हा पसंद करने के लिए ले जा रही हो, अगर वहां कोई पसंद आ गया तो क्या करोगी?

मां ने हंसते हुए हाथ दिखाया, 'जा अब जल्दी से तैयार हो जा।

मीटिंग में पहुंचते ही सुलोचना वीरेश से जोर से टकराई ,वीरेश जो नागपुर में इंजीनियरिंग कर रहा था। वह भी सर्दियों की छुट्टी में अपने मां बाप के पास आया हुआ था । दोनों इतनी जोर से टकराए थे कि एक दूसरे को गुस्से में घूम रहे थे फिर भी शिष्टतावश सॉरी बोलना पड़ा।

दोनों अपने -अपने मां बाप के पास जाकर बैठ गए। तभी थोड़ी देर में वीरेश की मां सुलोचना मां से मिली और बच्चों के बारे में बातें होने लगी। सुलोचना की मां ने, सुलोचना को वीरेश की मां को नमस्ते करने को कहा, तभी वीरेश वहां आ गया। सुलोचना और वीरेश का परिचय दोनों की माताओं ने कराया, अब दोनों में तकरार वाली कोई बात नहीं दिख रही थी ।

लेकिन न जाने क्यों वीरेश सुलोचना को चुपके-चुपके देख रहा था और सुलोचना भी छुप-छुप कर वीरेश की तरफ देख रही थी।

मीटिंग खत्म होने के बाद खाना खाकर सब अपने-अपने घर चले गए, लेकिन सुलोचना अपने मन में न जाने कितने ख्वाब बुन लाई थी। छुट्टी खत्म होते ही सुलोचना देहरादून चली गई और पढ़ाई में व्यस्त हो गई।

सुलोचना वीरेश का चेहरा नहीं भूल पाई। उसे वीरेश का धीरे-धीरे मुस्कुराना याद आ आता था। हॉस्टल में 1 दिन पापा का फोन आने पर सुलोचना घबराई। पापा ने पूछा तुम्हारी शादी की बात चल रही है हमारी जान पहचान का ही एक लड़का है शायद तुम उसे ब्राह्मण समाज की मीटिंग में मिली होंगी। शर्मा अंकल का लड़का वीरेश ,तुम्हें पसंद है क्या? सुलोचना के तो मानो पंख ही लग गए ,जो बात वह अब तक समझ ना पाई कि उसके साथ क्या हो रहा है? मानो अब हकीकत का रूप लेकर सामने आ गई हो।

वह वीरेश को अपने सपनों का राजकुमार समझने लगी थी और आज सपना सच होने जा रहा था।

उसने बिना कुछ कहे ही फोन का रिसीवर नीचे रख दिया और पापा समझ गए कि सुलोचना की हां है ।

सुलोचना अब खुद को वीरेश की दुल्हन के रूप में आईने में देखने लगी। दोनों के परिवार वालों ने सगाई तय कर दी।

वीरेश ने एक दिन सुलोचना को फोन पर बताया कि कैसे उसे सुलोचना से पहली नजर में ही प्यार हो गया था, लेकिन सुलोचना अपने मन की बात वीरेश को बता नहीं पाई कि उसे भी वीरेश से पहली नजर में ही प्यार हो गया था -सच्चा प्यार।

मॉडलिंग प्रतियोगिता में गुनतास व एकनूर रहीं प्रथम

26 दिसम्बर 2019 को स्टैप-2-स्टैप द्वारा चण्डीगढ़ में आयोजित मॉडलिंग प्रतियोगिता में डा: दर्पण की बेटियाँ व देवेन्द्र कुमार बंसल की नातियां 'गुनतास भाटिया' (उम्र 5 साल) ; 'एकनूर

भाटिया' (उम्र 9 साल) ने अपनी-अपनी आयु ग्रुप में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता में उत्तरीय जोन के लगभग सभी प्रदेशों से आए 40-40 बच्चों ने भाग लिया था।

प्रेम बना जीवन आधार

गढ़ता है नया संसार।
अधरों पर छायी मुस्कान
नयनों को फिर मिली जुबान।
प्रिय की छवि पड़े दिखाई
धड़कन ने जब रफ्तार बनाई।
बदले वेश निज व्यवहार
प्रेम बना जीवन आधार।।
स्नेह स्पर्श ने किया रोमांचित
हूं करीब मैं मन है विचलित।
संग तेरा मुझ पर आभार
प्रेम बना जीवन आधार।
संग प्रिय का लगे प्यारा
अंधियारी रैन का उजियारा।
जीवन संगी जीवन तुमसे, रंग
जीवन के सब तुम्ही से
प्रेम प्रकाश में खोया संसार
प्रेम बना जीवन आधार।।

सुमति श्रीवास्तव
जौनपुर (उत्तर प्रदेश)
sumatisri234@gmail.com

विशुद्ध प्रेम

डॉ. नीना छिब्बर
जोधपुर (राजस्थान)
neena.chhibbar@gmail.com

जेठ माह की गर्मी ,सडक किनारे खडा नीम का पेड भी सूर्य भगवान से कम तपिश की प्रार्थना कर रहा था। भर दुपहरी में सडक पर इक्का दुक्का जीव ही दिख रहे थे। मानव तो पंखे, कूलर,ए.सी,की ठंडक में त्राण पा रहा था पर पेड -पौधे, जीव जंतु अत्यधिक परेशान थे। ऐसे में नीम की जड़ें जो बाहर निकली थीं ,ठीक उसके थोड़ा ऊपर तना थोड़ा -थोड़ा थरथराया। ऐसा लगा जैसे नरम हाथों की मुलायम उंगलियों की पोरों से कोई नामालूम तरीके से उसे जकड रहा है। यह एहसास एक साथ ही आनंद और भय उत्पन्न कर रहा था।

पेड की डालों ने हरी-हरी पत्तियों के बीच में से झांका तो एक टूटा हुआ मिट्टी का गमला जिसमें मनी प्लांट की बेल लगी थी कोई वहाँ पटक गया था। बेल अपनी नरम जडों से पेड के भीतर अवलंब पाने का प्रयास कर रही थीं। बेल अपने अस्तित्व की रक्षार्थ विनम्रता से पेड को समर्पण की मुद्रा में देख रही थी और पेड ने भी निमोली की बरखा करके संकेत दिया।

यूँ तो नीम की पत्तियां ,निमोली, शाखाएं कडवी होती हैं पर हृदय मिठास से भरा होता है। कुछ ही सप्ताहों में ही टूटे गमले की हद को तोडकर बेल पेड से एकाकार हो गई। पेड के संरक्षण,प्रेम विश्वास से परित्यक्त बेल सुंदर ,मजबूत ,उद्वर्वगामी हो फैलने लगी। नीम और मनीप्लान्ट के नवरूप को देख कर सभी प्रसन्न होते। प्रकृति ने भी बर्षा का उपहार दिया।

मानव चाहे कमजोर ,बीमार, अनुपयोगी समझ वस्तुओं को बाहर फैंक देता है पर विशुद्ध प्रेम की प्रतीक प्रकृति सदा बाँहें फैलाये ,जीवों,, वनस्पतियों को पोषित करती है। दोनों एकदूसरे के स्नेहाशीष से अभिभूत थे।

प्रेम

माला रोहित कृष्ण नंदन
जयपुर (राज.)
malarohit24@gmail.com

इन से शब्द कहें या अहसास ये तो सिर्फ प्रेम में रहा हुआ ही कोई बता सकता है पर हां जैसे ही ये शब्द किसी के लबों से टकराकर सुकून के समंदर से होता हुआ कानों के कोमल पटल पर छपाक कर सुनाई देता है तो एक अद्भुत अहसास का जन्म होता है, जिसे बयां कर पाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन होता है। हर शब्द मौन हो जाता है और हमारा तन मन सब उसी पल कहीं ठहर जाते हैं और सांसों में शांति और सुकून की लहर दौड़ जाती है। प्रेम को शब्दों में बयां करना बिल्कुल वैसा ही है जैसा एक नन्हे बच्चे से ये पूछना कि अपनी मां से कितना प्यार करता है और वो अपने दोनों हाथ फैलाकर कहता है 'इत्ता' और फैलाता है और कहता है इत्ता बिल्कुल वैसा ही है बल्कि यूं कहो कि यही है प्रेम।

तस्वीर बोल उठी-23

तस्वीर : अपूर्व मित्तल

इस तस्वीर को देखकर आपके मन में जो भाव उमड़ रहे हैं बस उन भावों को काव्य भाषा की चार पंक्तियों में लिख डालिए। सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को माही संदेश के अगले अंक (अंतिम तिथि 20 फरवरी) में प्रकाशित किया जाएगा-

तस्वीर बोल उठी-22

रचना भेजने का पता

संपादक माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर- 302021(राजस्थान)।
email-mahisandesh31@gmail.com

तस्वीर बोल उठी-22 के अन्तर्गत काफी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुई सर्वश्रेष्ठ रचना को यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

जीवन का अमृत जल है
नभ जल से, जल से थल है
बूंद-बूंद खुशियों की धारा
बूंद से सागर को संबल है।।

अरविंद शर्मा 'अजान'
जयपुर (राज.)

नीरज गोस्वामी की कलम से

नीरज गोस्वामी
जयपुर, राजस्थान
मो. 98602-11911

'गागर में सागर' आपने ये जुमला अक्सर सुना होगा लेकिन मैं नहीं जानता के आप में से कितने ऐसे हैं जिन्होंने इसे महसूस किया है। गागर में सागर वाले करिश्मे बहुत कम हुआ करते हैं लेकिन ये करिश्मा, कम से कम मेरे लिए तो, किया है वाग्देवी प्रकाशन वालों ने। उन्होंने पाकिस्तान के उस्ताद शायर जनाब वजीर आग़ा साहब की एक किताब प्रकाशित की है जिसका नाम है 'उजड़े मकाँ का आईना'। इस छोटी सी पेपर बैक किताब के एक सौ साठ पृष्ठों में उर्दू शायरी का अनमोल खजाना भरा पड़ा है। वो लोग जो उर्दू शायरी की नफासत और नजाकत को पसंद करते हैं इस किताब को सीने से लगाये रखेंगे ये मेरा दावा है।

इतना न पास आ कि तुझे ढूंढ़ते फिरे
इतना न दूर जा कि हमावक्त पास हो
हमावक्त = हर समय
मैं भी नसीमे-सुब्ह की सूरत फिरूं सदा
शामिल गुलों की बास में गर तेरी बास हो
नसीमे-सुब्ह = सुबह की हवा

पाकिस्तान के सरगोधा में 18 मई 1922 में जन्मे वज़ीर आग़ा साहब हालाँकि हिंदी के पाठकों में अपने दूसरे साथियों की तरह बहुत अधिक प्रसिद्द नहीं हो पाए क्यूँ कि वो मुशायरों के शायर कभी नहीं रहे जहाँ कमोबेश रोमांटिक ग़ज़लें पेश की जाती हैं लेकिन अदबी हलकों में उनका दबदबा बाकायदा कायम है। आग़ा साहब नज्मों के उस्ताद माने जाते हैं लेकिन जब उन्होंने ग़ज़लें कहीं तो किसी से पीछे नहीं रहे-

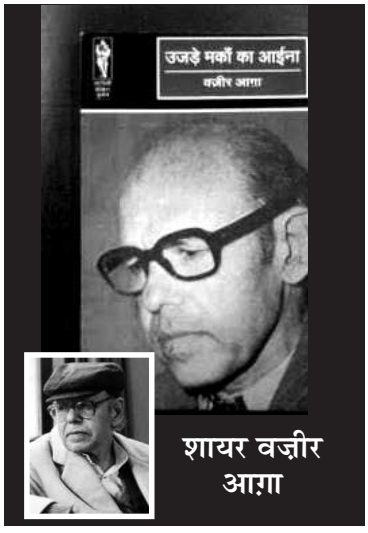

यकीं दिलाओ न मुझको कि
तुम पराये नहीं
मुझे तो ज़ख्म लगे तुमने ज़ख्म खाए नहीं
ये आईना किसी उजड़े मकाँ का आईना है
मैं गर्द साफ़ भी कर दूं तो मुस्कुराये नहीं
मकाँ ख़मोश अगर है तो दोष किसका है
करे भी क्या जो कोई
उसको घर बनाये नहीं

आग़ा साहब की रचनाएँ हिंदी और पंजाबी के अलावा ग्रीक, अंग्रेजी, स्वीडिश, स्पेनिश आदि कई यूरोपियन भाषाओँ में अनूदित हुई हैं. कई सम्मानों से अलंकृत वजीर आग़ा कुछ आलोचकों की दृष्टि में नोबेल पुरुस्कार के लिए पाकिस्तान से वाजिब हकदार हैं।

चुप रहूँ और उसे मलाल न हो
अनकही का तो ऐसा हाल न हो
कुफ्ल कैसे खुलेगा उस लब का
मेरे लब पर अगर सवाल न हो
कुफ्ल= ताला

जनाब शीन काफ निजाम और नन्द किशोर आचार्य जी ने बहुत मेहनत से इस किताब को सम्पादित किया है. इसमें आग़ा साहब की लगभग सौ से अधिक ग़ज़लें और चालीस के करीब नज्में समोहित हैं। उर्दू शायरी का हुस्न बिखेरती हर ग़ज़ल और नज़्म लाजवाब है और बार बार पढने लायक है। ये किताब ऐसी नहीं जिसे आप एक सांस में पढ़ कर उठ जाएँ बल्कि इसे घूँट घूँट पी कर देर तक इसके सरूर में डूबे रहें जैसी है। *तमाम उम्र ही गुजरी है दस्तकें सुनते, हमें तो रास न आया खुद अपने घर रहना...* आईये अब उनके छोटी बहर में किये गए बेमिसाल हुनर पर भी इक नज़र डालें और इस नायाब किताब को मंगवाने की ईमानदार कोशिश करे. आप ये पुस्तक वाग्देवी प्रकाशन से उनके मेल vagdevibooks@gmail.com पर अपना पता भेज कर मंगवा सकते हैं या फिर उनसे 0151-2242023 फोन नंबर पर संपर्क कर इसके बारे में जानकारी ले सकते हैं।

एक लम्हा अगर गुज़र जाये
दूसरा तो गुज़र ही जायेगा
अब ख़ुशी भी तो दिल पे वार करे
ग़म तो ये काम कर ही जायेगा
ज़ब्त करता रहा अगर यूँ ही
ये शज़र बे-समर ही जायेगा
बे-समर = फल रहित

छोटी बहर ही में उनकी एक और ग़ज़ल का लुत्फ़ उठाईये और देखिये के कैसे कम लफ़्ज़ों में गहरी बात की जाती है। ये हुनर हर किसी को ऊपर वाला अता नहीं करता।

आँख में तेरी अगर सहरा नहीं
हाल पर मेरे तू क्यूँ रोया नहीं
दस्तकें ही दस्तकें हैं हर तरफ
आदमी इक भी नज़र आता नहीं
मैं सदा दूं और तू आवाज़ दे
इस भरी दुनिया में मुमकिन क्या नहीं
रो रहा हूँ एक मुद्दत से मगर
आँख से आंसू कोई टपका नहीं

बस अभी इतना ही...अगर आप शायरी खास तौर पर अच्छी संजीदा शायरी के शौकीन हैं।

एक लड़की थी...

शरारती किस्से वो फोन पर सुनाया करती थी
एक लड़की थी मुझे गोद में सुलाया करती थी
बिन बाबा के कैसे बीती थीं उसकी माँ की रातें
कुछ बेचैनियाँ थीं सिर्फ मुझे बताया करती थी
डर मेरी उल्फ़त से था, कोई और पसंद था उसे
इसी बात पर ज़्यादा खुद को रुलाया करती थी
वैसे तो कोई नाम नहीं था उस रिश्ते का कभी
लेकिन बेगमों वाले हक खूब जताया करती थी
सिर्फ मेरी ही है वो जब मैं जिद्द पकड़ लेता था
रुठने पर मुझे कभी माँ जैसे मनाया करती थी
उसके बिना रहना कैसे है जब भी मैंने बातें कीं
झगड़े हो जाते ऐसी तरकीबें सुझाया करती थी
जो कहने से दोनों डरते थे, किताबों में लिखे थे
ऐसे जज़्बातों पर वो निशान लगाया करती थी
कैसे तुमको अपना बना लूँ जब भी पूछता उसे
खेल-खेल में घास की अंगूठी बनाया करती थी
उधर से गुजरते वक़्त घर उसका मिल गया था
अपने घर कभी जो चाय पर बुलाया करती थी
मंदिर,मस्ज़िद, गुरुद्वारे भी गया हूँ उसके साथ
मुझे कबूला नहीं, बस ख़ुदा दिखाया करती थी
कभी वो भी चली जायेगी मुझे मालूम था मगर
सच्ची कसमें खुदा के सामने खाया करती थी
उसी शहर में रहता हूँ उन जगहों पर मैं जाता हूँ
वो मिलने आएगी, जहाँ मिलने आया करती थी।

तान्या सिंह
गोरखपुर - उत्तर प्रदेश
a.tnya.it@gmail.com

प्रेम की कमी से
'एनिमिक' हो जाती हैं 'स्त्रियां'

प्राणी मात्र को जीवित रहने के लिए रोटी, कपड़ा और मकान के साथ-साथ प्रेम ही चाहिए। स्त्रियां? प्रेम ही खाना, पहनना, ओढ़ना चाहतीं हैं। प्रेम में ही रहना चाहती हैं। उनके जिस्म में प्रेम की कमी झलकती हैं, आंखों के नीचे काले घेरों से धंसे गालों के समीप उदास चेहरे से।

स्त्रियां? अक्सर पोषक खाने की वजह से ही नहीं प्रेम की कमी से 'एनिमिक' हो जाती हैं।। हे पुरुष, तुमने स्त्री को समझने के लिए कितने ग्रंथ, किताबें पलट दिए, एक बार उससे ही प्रेम से पूछ लेते उसकी उदासियों का कारण, वो पूछने भर से ही मात्र बता देती अपने उदासी का कारण तमाम खोल देती अपना राज़, लिपट जाती आकर तुम्हारे आगोश में और रो सकती ,बहार निकल सकती थी। स्त्रियां? जटिल हो जाती हैं।

क्योंकि तुम सरल नहीं हो पाते। कितने मुर्ख हो तुम स्त्री को संतुष्ट करने के लिए तुम उसके जिस्म में फिरते रहे और वो मन के मंदिर में तुम्हारा जिंदगी भर इंतजार करतीं रहीं... कोई किसी को न पा सके..। इतिहास गवाह है स्त्री ने जब भी पुरुष से प्रेम पाया, पुरुष ने उसे जिस्म परोस दिया...कितनी बड़ी नाइंसाफी है।।

मीना परमार
जयपुर, राजस्थान
mahisandesh31
@gmail.com

'पंछी' बेस्ट फिल्म (राजस्थान) के अवॉर्ड से सम्मानित

हाल ही आयोजित जयपुर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में आर्सोल प्रोडक्शन के बैनर तले बनी फिल्म 'पंछी' को बेस्ट फिल्म (राजस्थान) के अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। जिसके निर्देशक राघव रावत और मोहित शर्मा हैं इस फिल्म के कहानीकार व संवाद लेखक सुनील प्रसाद शर्मा (पुलिस उप अधीक्षक- जयपुर ग्रामीण) हैं जिन्होंने प्रयास एनजीओ के साथ मिलकर इस बेहतरीन फिल्म का निर्माण किया है। यह फिल्म बालश्रम पर आधारित है जिसमें राजस्थान पुलिस एवं एनजीओ के द्वारा बालश्रम निषेध हेतु किए गए महत्वपूर्ण कार्यों एवं अपेक्षित संभावनाओं को रेखांकित किया गया है। इस फिल्म निर्माण में दिल्ली के पूर्व पुलिस आयुक्त आमोद कंठ साहब का योगदान और प्रेरणा महत्वपूर्ण है।

मेरी प्रीत 'भारत मां'

मां तू सब कुछ देख रही है
तेरा आंचल तेरी गोदी
आज लहू से सींच रही है
मां तू सब कुछ देख रही है

कल धरती का लाल पुकारा
आज वो रिश्ता बीच नहीं है
मां तू सब कुछ देख रही है

आज के नेता उनकी नीति
क्या पहचान ढूंढ़ रही है
मां तू सब कुछ देख रही है

जो बने फिरते थे रखवाले
उनकी नीयत ठीक नहीं है
मां तू सब कुछ देख रही है

हो प्रकट कर अपने बस में
क्यूं तू आंखें मींच रही है
मां तू सब कुछ देख रही है

मेरा हक ज्यादा है तुझपे
क्यूं सवाल है मेरे हक पे
हर सज़दे में पूरी कौम
तुझपे माथा टेक रही है
मां तू सब कुछ देख रही है।

शाज़िया किदवई
दुबई
mahisandesh31@gmail.com

कितनी लंबी राह है ...

दे देती हैं आँखें भी,
धोखा, अक्सर खुद अपने को
क्यों देती हैं तोड़,
जागकर, अपने सुंदर सपने को।

कितनी लंबी राह है
थकने का लेती ही नाम नहीं
अब लेकिन है चलते-चलते पाँव
हमारे थकने को।

रक्खे थे सपने जो सारे हमने
वो तो टूट गए
अब तो दिल की चादर पर
यादें हैं केवल टँकने को।

जो कुछ था वो लूट ले गई
दुनिया बनके दोस्त सभी
अब तो खाली जेबें हैं बस खाली
दिल है रखने को।

जाने कितनी बार घटी हैं
दुर्घटनाएँ अपने संग
अब बाकी ही कहाँ बचा है कुछ
अपने संग घटने को।।

प्रगीत कुंअर
सिडनी (ऑस्ट्रेलिया)
prageetk@yahoo.com

तू किसी प्यार की...

तू किसी प्यार की पहेली है
क्या तुझे है पता
कि अब मैंने
एक अनजान राह ले ली है
मैं तुझे ही तलाश करता हूँ
तू किसी प्यार की पहेली है
मैं वही कल, कि ज्योतिषी ने जिसे
आज तक प्यार से नहीं देखा
छू गई जब नई नज़र तेरी
बन गया मैं सौभाग्य की रेखा
एक आश्रय
बनी हुई तू ही
रेख मैं, और तू हथेली है ।
मैं तुझे ही तलाश करता हूँ
तू किसी प्यार की पहेली है।।
बात क्या है कि प्रीति का मौसम
आज दिन में उदास बैठा है
आँख में अश्रु हैं, मगर लेकर-
होठ पर एक प्यास बैठा है
तू इसे प्यार की
छुअन दे-दे
एक धड़कन बहुत अकेली है।
मैं तुझे ही तलाश करता हूँ
तू किसी प्यार की पहेली है।।

डॉ. कुंअर बेचैन
गाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश)
prageetk@yahoo.com

तुम कहो तो तुम्हें ख़ुदा कह दें

अक्स कह दें कि आइना कह दें
सोचते हैं कि तुमको क्या कह दें

रहनुमाओं सी बात करते हो
तुम कहो तो तुम्हें ख़ुदा कह दें

ख़्वाब आँखों में रख लिए तेरे
आ कभी करके हौसला कह दें

मेरी ख़ामोशियाँ समझते हो
क्या तुम्हें अपना हमनवा कह दें

दर्द में भी क़रार देते हो
दर्दे-दिल की तुम्हें दवा कह दें

बातों-बातों में रूठना 'ज़ीनत'
क्या इसे आपकी अदा कह दें।

योगिता 'ज़ीनत'
जयपुर राजस्थान
neha.sharmaa29@gmail.com

सूखे बंज़र गलियारों में

सूनापन रातों का,
और वो कसक पुरानी देता है
टूटे सपने, बिखरे आँसू,
कई निशानी देता है

दिल के पन्ने इक-इक करके
खुद-ब-खुद खुल जाते हैं
हर पन्ने पर लिखकर फिर वो,
नई कहानी देता है

उसके आने से ही दिल में,
मौसम कई बदलते हैं
सूखे बंज़र गलियारों में,
रंग वो धानी देता है

आँखों में ऐसे ये डोरे,
सुर्ख उतर कर आते हैं
जैसे मदिरा पैमाने में,
दोस्त पुरानी देता है

उसकी यादों का जब मेला,
साथ हमारे चलता है
टूटे-फूटे रस्तों पर भी,
एक रवानी देता है

पास वो आके कुछ ही पल में,
जाने की जब बात करे
झील सी गहरी आँखों में वो,
बहता पानी देता है।

डॉ. भावना कुंअर
सिडनी (ऑस्ट्रेलिया)
bhawnak2002@gmail.com

आ गया मधुमास

हे प्रिये!
आ गया मधुमास

हे प्रिये!
आ गया मधुमास
प्रिय बसंत का प्रवास
जग रही फिर मन में देखो !
तेरे आने की आस !!

फिर खिलेंगे हर डाल पर
बसंती पीत पुष्प-गुच्छ !
मैं रचूँगी तेरे लिए
मेरी बाहों का हार!!

उत्सुक बहुत नैना मेरे
दृष्टि भी व्याकुल अति!
आहट तेरी जो मिले मुझको
सजा लूं मैं घर-द्वार !!

उमड़ते हैं भाव हर पल
सज रही जीवन की राग!
हे प्रिय ! मनमीत मेरे ,
तू ही जीवन का आधार!!!

कल्पना गोयल
जयपुर
ayushi62goyal.ak@gmail.com

प्रेम सबसे बड़ी चीज है

प्रेम दुनिया में सबसे हसीं चीज है
प्रेम अंतस में सबके बसी चीज है
न ही बंगला न कोठे न कोई भी शय
प्रेम दुनिया की सबसे बड़ी चीज है

प्रेम में पड़के राधाजी रानी बनीं
प्रेमियों की अमर वो निशानी बनीं
प्रेम ने जाने कितनों को जीवन दिया
प्रेम ही था कि मीरा दीवानी बनी

इससे बढ़के न तीरथ है दूजा सुनो
प्रेम ही है दीवानों की पूजा सुनो
और भी हैं बहुत सारे भाव यहां
प्रेम सा ना हुआ कुछ न होगा सुनो

प्रेम छाया है ठंडी खिली धूप है
प्रेम ही भावनाओं का स्वरुप है
प्रेम से ही चली है ये दुनिया सदा
प्रेम अल्लाह ईश्वर का ही रुप है

डोर सांसों की एक दरमियाँ डाल दे
सादगी में भी रंगीनियां डाल दे
प्रेम ने ही बनाया है सुंदर ये जग
प्रेम वो है जो पत्थर में जां डाल दे

प्रेम सत्कर्म सत्संग सद्भाव है
प्रेम के इस जहाँ में कई भाव हैं
प्रेम माता पिता प्रेम भाई बहन
प्रेम हर एक रिश्ते का प्रभाव है।

विक्रम कुमार
वैशाली, बिहार
मो. - 6200597103

माँ

माँ तू तो प्रेम की मूरत है
माँ तेरी अच्छाई का
बयां शब्दों के माध्यम से
कर पाना सरल नहीं है
हाँ माँ अपनी खुशी न्योछावर कर
सदा बच्चों को खुशी
प्रदान की है तुमने।।

माँ खुद तू सहती है
असीमित पीड़ा पर
अपनी संतान को तनिक भी
आभास न होने देती है तू पीड़ा
सच में माँ तेरी
अच्छाई तेरी उदारता का व्याख्यान
शब्दों में कर पाना सरल नहीं।।

माँ सचमुच तू ईश्वर का रूप है
तभी तो हर दुख और सुख
में तू सदा साथ निभाती है
ममत्व की मूरत है तू
माँ तुम-सा इस जहां में
कहाँ और कोई है
सच में माँ तेरी परिभाषा
शब्दों के माध्यम से व्यक्त
कर पाना सरल नहीं है।।

माँ तू तो ईश्वर से भी
करती है हर पल प्रार्थना कि
मेरे पुत्र के हिस्से का सब
दुख हे ईश्वर आप कर दीजिए
समर्पित मुझे,हाँ माँ
तू तो त्याग और तपस्या की मूरत है
हाँ माँ
अपनी संतान के प्रति तेरे प्रेम स्नेह
के विषय में शब्दों के
माध्यम से व्यक्त कर पाना सरल
नहीं है।।

कुमार संदीप
मुजफ्फरपुर (बिहार)
मो. 6299697700

मुहब्बत बस मुहब्बत है

न भूला हूँ तुझे
न याद करने की जरूरत है
मुहब्बत में तो शुभ है
हर घड़ी ही इक मुहूरत है
कि परिभाषा नई देने चला था मैं
मुहब्बत को
समझ आखिर में आया,
मुहब्बत बस मुहब्बत है
मेरे बिन मुस्करा तू ले,
तेरे बिन मैं हँसू जी भर
न इतनी तेरी कूव्वत है
न इतनी मेरी कूव्वत है
सितारे ,चाँद,
सूरज आसमाँ पर देख कर सोचूं
तेरी सूरत है इन जैसी कि इनमें
तेरी सूरत है
जमाने के सभी मसले,
भला हल क्यूँ नहीं होंगे
जिये हर दिल,
अगर दिल में बसा के कोइ मूरत है
चलूँ जिस राह भी आखिर पहुँच
जाता तुझी तक हूँ
समझ आता नहीं ये मेरी
ग़फ़लत है कि फितरत है
न जाने क्यूँ , तुम्हारी याद में जीने
को दिल चाहे
जरूरी तो नहीं इसके लिए तेरी
इजाज़त है।।

रविंद्र श्रीवास्तव
गाज़ीपुर (उत्तर प्रदेश)
मो. 9415890673

कहां गया वो वक़्त सुहाना

जब तुमको हम ख़त लिखते थे
शब्द शब्द पर हम खुश होकर
कितनी बार उसे पढ़ते थे
तुम भी तो घर भर से छुपकर
उसका उत्तर लिख देती थी
मोती जैसे कुछ शब्दों से
कितनी उलझन हर लेती थी
उस ख़त की हर इक पंक्ति में
खुशबू तेरी मिल जाती थी
देर रात जब सब सो जाते
तुम तब ख़त को पढ़ पाती थी
आज नहीं हो प्रिये तुम तो
रखा हुआ वो पत्र अभी है
जिसकी लिखी हर इक पंक्ति में
इत्रदान की खुशबू सी है।

डॉ. जियाउर रहमान जाफ़री
नालंदा, बिहार
मो. 9934847941

इमली का पेड़

वह इमली का पेड़ जो कट गया
वह था एक घर जो गिर गया
नहीं जा रहीं सीढ़ियां अब ऊपर तक
यादें...कुछ आवाजों की हलचल
पापा भी हैं बैठे बाग में
नानी के सरोते की आवाज़
और हाथ के पंखे की ठंडी हवा
डांट के बाद घी-चीनी रोटी
सभी कुछ तो याद है
एक बच्ची गई स्कूल
एक आई बारात
सब कुछ तो हुआ वहीं
जो अब नहीं...।

लतिका सिंघा
जयपुर (राजस्थान)
mahisandesh31@gmail.com

पिता को पत्र...

पिता को पत्र लिखा था
वह मृत्यु के नगर गए थे
और अब पते की जरूरत थी

सब भाषाओं को देखा
अनंत धर्मग्रंथ खंगाले
शब्दकोषों की धूल खाई
पर पता नहीं मिला

अपने बाल नोचती
सारी पृथ्वी का भ्रमण करती
एक दिन पहुंची चेतना के नगर
ज्ञान की गली में
ध्यान का द्वारऔर
द्वार के उस पार
'उत्थान' का उद्यान

चित्त छूटा संशय गया
वहींबोधिवृक्ष के नीचे
तथागत के चरणों के पास
जीवन मृत्यु के संधिकाल पर
अमृतरस से भरा कमंडल

कृष्ण की बंसी की धुन पर
गाते हुए आए कबीर
और नानक के हाथ से लेकर
सिंचित करने लगे एक 'बीज'
मीरा का नृत्य और
सूफियों के चिमटे का 'झम्म'
तत्क्षण
'नवपौध' का उद्गम

संख्यातीत सवालों की लपटें
और शीतल सा 'उत्तर'
पिता का पता मिल चुका था
अब पत्र भेजने की
आवश्यकता नहीं थी।

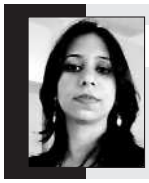

अनुजीत इकबाल
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
anujeet.lko@gmail.com

'तुम...'

तेरा मेरा साथ कितना है,
साँसों का व्यापार जितना है...
बिखरे परागकणों को
तुम जोड़ लोगी,
रूठे हुए मधुमास को
तुम मोड़ लोगी,
मुझे तुम पे विश्वास इतना है।
है यकीन मुझे कि,
जीवन से तुम,
साथ मेरा फिर जोड़ दोगी।
टूटे हृदय के तार को
फिर जोड़ दोगी।
मेरे लिए सुन्दर स्वप्न हो,
हृदय का तुम चन्दन हो,
भावों का पावन स्पन्दन हो,
मेरे विहग मन का नर्तन हो।
निर्झरा-सी बहना सदा,
औ मुस्कुराती रहना सदा।
रिक्त हृदय का अनुराग हो।
मन का अर्नतिम विश्वास हो।
चाँदनी में उन्माद है जितना,
तारों में प्रकाश है जितना,
संगीत में निनाद है जितना,
प्रिये!तुझपे अभिमान है उतना।
जीवन-तम में प्रकाश हो तुम,
अपने प्रण-प्रेम का,
क्षितिज ही कह लूँ तुम्हें।
तो है ज़्यादा सही,
इस क्षणभंगुर जीवन का,
सुन्दर रूप साकार हो तुम।
हे प्रिये!
मेरे जीवन-सुख की ,
अक्षुण्ण मेखला तुम।
मेरे मधुर जीवन का,
अनवरत गान हो।
तेरा मेरा साथ कितना है,
साँसों का व्यापार जितना है।

ज्योति अग्निहोत्री
इटावा, उत्तर प्रदेश
ईमेल-
jyotietw15@gmail.com

'छत पर कबूतर'

कभी होता था छत,
हमारे घर भी,
आँगन मिट्टी का,
सुबह सवेरे जहाँ,
गोबर से लिपाई होती थी!
हम रेखायें खींच कर,
एक्कट-दुक्कट खेला करते थे!
छत पर मेरी माँ,
माथे पर आँचल डाल कर,
गेहूँ सुखाया करती थी.!
वहीं साथ में,
गेहूँ के कुछ दाने वह,
धरती पर बिखरा देती.!
जिसे,कबूतर आकर चुन लेते.!
मेरी माँ को कबूतर की
खूब ही पहचान थी,
जिस दिन उनका
प्यारा लका कबूतर,
दाना चुगने नहीं आता,
माँ उदास हो जाया करती.!
माँ की भाषा,वह खूब समझता.!
माँ उससे बोलती-बतियाती,
जवाब में वह भी अपना
सिर हिलाकर,
गूँटर-गूँ की आवाजें,
निकाला करता!
हैरान रह गये हम सभी,
जब माँ के बाद,
उनका प्यारा लका कबूतर,
दाना चुगने मेरे छत पर,
कभी नहीं आया!
छत भी वही,
गेहूँ के दाने भी वही,
वह लका कबूतर,
छत पर फिर,
कभी नहीं आया.!

डॉ.विभा रंजन (कनक)
नई दिल्ली
bibha.g3@gmail.com

पूर्ण परिशुद्ध प्रेम..

प्रतिदिन
सवेरे सवेरे जब मैं
मंदिर में बैठती हूँ
ठाकुर जी की सेवा पूजा करने तो
अक्सर ही ना जाने क्यूँ
प्रभु की मनमोहक मूरत में
दिखती है तुम्हारी सूरत..

जब मैं बजाती हूँ मंदिर में घंटी तो
उसकी ध्वनि की प्रतिध्वनि में भी तो
तुम्हारी ही आवाज़ सुनाई देती है
मानो तुमने हौले से कुछ कहा हो..

जब पूरी तन्मयता से जलाती हूँ
लौबान युक्त अगरबत्ती तो
उसमें से उठता धुआं व सुगंध
अपनी गिरफ्त में लेकर कराते है मुझे
तुम्हारे आस पास होने का एहसास..

जब अर्पित करती हूँ श्री चरणों में
सुगंधित सूर्ख लाल गुलाब के पुष्प
तो लगता है कि समर्पित कर दिया
है मैनें मेरा ह्रदय रूपी पुष्प भी..

जब लगाती हूँ ठाकुर जी को
चंदन चावल तो लगता है कि
तुम्हारे स्पर्ष की शीतलता
उतर जाती है मेरे अंतर्मन की
गहराईयों में...

और जब उतारती हूँ मैं
भाव विव्हल होकर आरती तो
उसके आलौकिक प्रकाश में
हर तरफ हर ओर सहस्त्र रूपों में
नज़र आते हो तुम ही..
अखण्ड़ ..अथाह ...अनंत....

सोचती हूँ मैं ...
हर रोज़ ...
क्या यही है प्रेम
हां ..शायद यही तो है
पूर्ण परिशुद्ध प्रेम..।

लीना खेरिया
अहमदाबाद (गुजरात)
leenakheria1972@gmail.com

'तुम साथ दो'

तू साथ दे दे, अगर हाथ दे दे,
आसां सफ़र हो जाये
मैं तेरी नज़र बन जाऊँ,
तू मेरी नज़र हो जाये
साथ सफ़र की शुरुआत कर लें,
दिल की, दुनिया की कुछ बात कर लें
मुझे भी पता हो तुम्हारा नज़रिया,
तुझे मेरे मन की ख़बर हो जाये
अब कोई ख़्वाब ज़रूरी नहीं है
कि तू जो हक़ीकत मेरी बन गया
तेरा हाथ थामे चलूं जिस घड़ी मैं,
वहीं से सिहर फिर सहर हो जाये
यूं ही चलते हुए साथ साथ
हमको ठहरना जो इक दिन हुआ
जिस पल थमना सफ़र हो तुम्हारा
उसी पल मेरी ठहर हो जाये।

वैशाली साहू 'गंगोत्री'
गाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश)
sahu.vaishali@gmail.com

गुड़िया हूँ तुम्हारी

आँगन में फुदकती, चिड़िया हूँ तुम्हारी,
याद रखना वीर, छोटी गुड़िया हूँ तुम्हारी।

सुनी कलाई सजाती हूँ तेरी,
माथे पे चंदन लगाती हूँ तेरे।
भाई हो तुझसा बहन मेरे जैसी,
जमाना मिसालें दे तेरी-मेरी।
नाराजगी में मुँह न फेर लेना,
क्योंकि तुम हो खुशियां हमारी...

याद रखना वीर, छोटी गुड़िया हूँ तुम्हारी...

बेशक तुझे मैंने सताया भी होगा,
कभी-कभी तुझको चिढ़ाया भी होगा।

भूल मत भाई कभी मैंने तुझको,
मैया की डांट से बचाया भी होगा।
बहना हूँ तेरी तेरा प्यार चाहूँ,
बदले में ले लूं बलाएं तुम्हारी...

आँगन में फुदकती, चिड़िया हूँ तुम्हारी,
याद रखना वीर, छोटी गुड़िया हूँ तुम्हारी।

दीपक अवस्थी 'बंसीधर'
बाराबंकी, उत्तर प्रदेश
मो. 7905648017

प्रेम

प्रेम एहसास है
प्रेम आभास है
प्रेम तपते से मन की
इक प्यास है
प्रेम राधा भी है
प्रेम कान्हा भी है
प्रेम उत्सुक हृदय की
अभिलाष है

प्रेम अंतर्मन में निहित घाव है
प्रेम भटके पथिक का इक ठांव है
प्रेम जल में भी है
प्रेम थल में भी है
प्रेम जेठ की इक शीतल छांव है

प्रेम व्याकुलता में मिली आस है
प्रेम लैला और मंजनू का विश्वास है
प्रेम शबरी भी है
प्रेम मीरा भी है
प्रेम सूर और तुलसी की हर सांस है

प्रेम निर्गुण निराकार का भाव है
प्रेम सुख में भी सुख का ही अभाव है
प्रेम खोने में है
प्रेम पाने में है
प्रेम राम और सीता का अलगाव है

प्रेम सम्पूर्ण जग में है छाया हुआ
प्रेम कण- कण में है समाया हुआ

प्रेम श्रध्दा में है
प्रेम पूजा में है
प्रेम मानव जीवन महकाया हुआ

प्रेम मोहन के बंसी की मधुर रागिनी
प्रेम शिव में है बन शिव की अर्धांगिनी
प्रेम नारद के वीणा का एक साज है
प्रेम विष्णु के पांचजन्य का नाद है

प्रेम उत्पत्ति है प्रेम ही है पतन
प्रेम पाने को करते रहे सब जतन
एक दिन प्रेमी संसार हो जाएगा
प्रेम में डूब भव पार हो जाएगा

प्रेम एहसास है
प्रेम आभास है।

बबिता पाण्डेय
नई दिल्ली
chetnaupadhyay986@gmail.com

तुम को ना भूल पाएंगे

तुम को ना भूल पाएंगे
हो वो सपना तुम जो पूरा ना हुआ
प्यार नहीं थे मेरा
थी सिर्फ एक मुलाकात
जो थी इतनी खास
एक अहसास था वो बहुत खास
एक तरफा था शायद
कई साल बीत गए
वो लम्हा आज भी आँखो में समाया है
तेरा वजूद आज भी दिल में छुपाया है
अनगिनत कोशिशों के बाद भी भूल न पाए
कई साल हर आहट पर
तेरे आने की उम्मीद लगाए
टूट गयी वो उम्मीद पर तेरा वजूद आज भी दिल में कायम है
पता नहीं ये प्यार था या कशिश या आकर्षण
जो भी था उस सपने को आँखों में बसाया है
तेरा वजूद आज भी दिल में छुपाया है
तेरा वजूद आज भी दिल में छुपाया है।

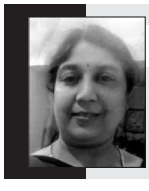

शालिनी जैन
गाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश)
mahisandesh31@gmail.com

'भारत कोकिला'

13 फरवरी-जन्म दिवस

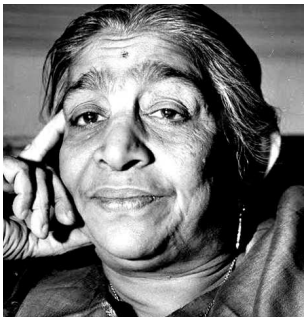

नारी मुक्ति की थी प्रबल समर्थक,
वह 'भारत कोकिला' कही गई।
तेरह फरवरी को हैदराबाद जन्म,
यूपी की प्रथम राज्यपाल हुई।।

सरोजिनी नायडू ने तेरह वर्ष में ही,
'झील की रानी' कविता लिख दी।
कुशाग्रता विलक्षण प्रतिभा उनमें,
दो हजार पंक्ति का नाटक रच दी।

गाँव कस्बों में जाकर नायडूजी ने,
देश प्रेम का खूब अलख जगाया।
देश वासियों को सरोजिनी जी ने,
कर्तव्य को बखूबी याद दिलाया।।

देशप्रेम कूट कूट कर भरा था उनमें
एनी बेसेंट की वह प्रिय मित्र बनी।
गाँधी जी की प्रिय शिष्या सरोजिनी,
कानपुर में कॉंग्रेस की अध्यक्ष बनी।।

साथियों में वह बहुत लोकप्रिय रही,
सब उनसे शक्ति साहस ऊर्जा पाते।
बढ़ चढ़ कर स्वतंत्रता आंदोलन में,
देशभक्ति की लोगों को बात बताते।।

द गोल्डन थ्रेसहोल्ड व ब्रोकन विंग,
बर्ड ऑफ टाइम संग्रह लिख दिया।
कुशल नेतृत्व व प्रशासक साबित,
नारी की दशा के लिए कार्य किया।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
भवानीपुर (उत्तर प्रदेश)
मो. 7355309428

बिटिया के नाम प्रेम भरा पत्र
खुशी के मायने

प्यारी हिनू,

आज तुम्हारे दूसरे जन्मदिन पर अनंत शुभकामनाएं और आशीर्वाद। आज के दिन उस ईश्वर को भी शुक्रिया जिसके आशीर्वाद से तुम जैसी प्यारी सी,नटखट सी,परी जैसी बिटिया मेरे जीवन में आई और बन गया मेरा हर पल तुम्हारी छम छम बजती पायल सा मधुर और सुरनुमा ।

बिटिया आज तुम्हें बताना चाहता हूँ कि क्या होते हैं खुशी के वास्तविक मायने, क्या होता है अंतर, पाने की खुशी और देने की खुशी में, क्या खोकर भी महसूस की जा सकती है कोई खुशी, क्या पैसों से ही संभव है हर खुशी, क्या खुशी का संबंध बाहर से है या भीतर से। इन सब प्रश्नों से भिन्न बताना चाहूँगा उस खुशी के बारे में भी जो मिली है मुझे सिर्फ तुम्हारे साथ से।

जानती हो हिनू आज ये विषय क्यों चुना है मैंने, तो बिटिया मेरे लिए सबसे बड़ी खुशी का दिन वो दिन ही था जिस दिन जन्म लिया था तुमने हमारे आँगन में मेरी बेटी के रूप में और दिया था अवसर मुझे पिता कहलाने का। बिटिया तुमने मुझे वो खुशी दी जिसकी तुलना अन्य किसी भी सुख या वैभव से नहीं की जा सकती है। इस खुशी के अवसर पर जान सको तुम भी मेरी,तुम्हारी और सबकी खुशी के सही मायने यही कोशिश और संदेश है तुम्हारे पिता का अपनी बेटी के लिए।

बिटिया तुम्हारे पिता के अनुभव और अध्ययन ने यही पाया है कि वास्तविक खुशी वही है जो भीतर से स्वत: उत्पन्न हो, जो आपके रोम-रोम में महसूस की जा सके और जीवन में

सुकून लेकर आये। बुद्ध ने अपने प्रतीत्यसमुत्पाद के द्वादश निदान चक्र में बताया है कि दु:ख और जरा मरण का कारण तृष्णा या इच्छा होती है। सत्य ही है बिटिया पाने की इच्छा,संग्रहण की इच्छा,और अन्य सभी प्रकार की इच्छा क्षणिक सुख भले दे दे परंतु वास्तविक सुख नहीं दे सकती है। वास्तविक सुख और खुशी की प्राप्ति त्याग में,समर्पण में,बाँटने में और अपनी आवश्यकताओं को सीमित करने में है। 'वन' में रहने वाले राम सोने की लंका में रहने वाले रावण से शांत और सुखी थे, क्योंकि कोई भी भौतिक या बाहरी वस्तु आप को सच्चा सुख नहीं दे सकती है सच्चा सुख स्वयं के भीतर से ही उत्पन्न हो सकता है।

बिटिया बड़ी होने पर तुम्हारे जीवन में भी अनगिनत अवसर आयेंगे जब तुम्हें चुनना होगा पाने और खोने में से कोई एक विकल्प। अगर तुमने सीख लिया खोने में खुशी को पाना तो जीवन में अनेक दु:ख स्वत: ही दूर हो जाएंगे तुमसे। एक बात और जो तुमको खुशी का अवसर देगी वो है किसी जरूरतमंद की मदद, किसी असहाय की सहायता, और किसी रोते हुए इंसान के आंसू पोंछकर उसकी पीड़ा को सुनना। बिटिया सिविल सेवकों के गुणों में से एक गुण 'परानुभूति' भी होता है जो बताता है कि किसी की पीड़ा को न सिर्फ सुनना बल्कि उसकी पीड़ा से स्वयं को जोड़कर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिये, कोशिश करना तुम भी विकसित कर सको अपने में परानुभूति का यह गुण।

बिटिया एक बात और जो तुम्हारी दादी (मेरी माँ) मुझे बचपन में अक्सर कहा करती थी, जब भी खाने की कोई स्वादिष्ट वस्तु घर में आती थी,कि 'बाँट कर खाना और बैकुंठ जाना'। बिटिया अब जानने लगा हूँ कि माँ के द्वारा बताया गया बैकुंठ कोई कल्पनालोक या स्वर्ग नहीं है अपितु वो बैकुंठ वास्तविक खुशी और आत्मिक संतोष है। जिसे सुलभ ही प्राप्त किया जा सकता सिर्फ कुछ छोटी छोटी आदतों को जीवन में अपनाकर कोशिश करना कि विकसित कर सको तुम भी अपने हृदय में उदारता के भाव को।

बिटिया पता नहीं तुम्हारे जन्म के बाद न जाने क्यों हर छोटे बच्चे में तुम ही नजर आती हो। लगता है तुमसे मिलने वाली खुशी 'जादू' भी कर रही है अब तुम्हारे पापा पर। आखिर में,मेरे लिए कहे जाने वाले तुम्हारे प्यारे से संबोधन-

'ए पापा,ओ पापा, ओ पापाजी, सुलेश जी और फिर भी अनसुना करूँ तो सीधा 'सुलेश पापा'

सदैव खुश रहो मेरी प्यारी बिटिया, माँ अम्बे की कृपा सदैव तुम पर बनी रहे।

तुम्हारा पापा
सुरेश

'ऋतु आए ऋतु जाए सखी री'- निम्मी

शिशिर कृष्ण शर्मा
फिल्म इतिहासकार
मो. 9821394486

साल 1949 में बनी राजकपूर की फिल्म 'बरसात' से संगीतकार जोड़ी 'शंकर जयकिशन' और उत्कृष्ट गीतकारों 'शैलेन्द्र' और 'हसरत जयपुरी' के साथ ही एक बेमिसाल अभिनेत्री ने भी हिंदी सिनेमा में कदम रखा था, जिसका नाम आज भी दर्शकों के ज़हन में ताजा है और वो नाम है 'निम्मी' का। ये अलग बात है कि 'बरसात' की जबर्दस्त कामयाबी ने जहां शंकर जयकिशन, शैलेन्द्र और हसरत जयपुरी को 'आर.के.' की टीम का अटूट हिस्सा बना डाला वहीं निम्मी के लिए ये इस बैनर की पहली और आखिरी फिल्म साबित हुई। इसके बावजूद बेपनाह खूबसूरती और सहज अभिनय के दम पर निम्मी बहुत जल्द अपनी एक अलग पहचान बनाने में कामयाब रहीं।

18 फरवरी 1933 को जन्मीं निम्मी के अब्बा मेरठ के रहने वाले थे। एक मुलाकात के दौरान निम्मी ने बताया था कि उनके दादा एक रईस सरकारी ठेकेदार थे जिनके गुजरने के बाद निम्मी के अब्बा कारोबार को ठीक से संभाल नहीं पाए और धीरे-धीरे सब कुछ लुटा बैठे। निम्मी कहती हैं, 'मेरी मां आगरा से 24 मील (40 किलोमीटर) दूर फतेहाबाद कस्बे की रहने वाली थीं और मेरा जन्म अपने ननिहाल में हुआ था। कारोबार डूबने के बाद अब्बा को रोजी-रोटी की तलाश में परिवार को साथ लेकर मजबूरन कोलकाता जाना पड़ा जहां पड़ोस में रहने वाले ए.आर.कारदार से हमारे पारिवारिक रिश्ते बन गए। हमारे हालात पर तरस खाकर ए.आर.कारदार ने अब्बा को जज का एक छोटा सा रोल दिया लेकिन कैमरा और लाईटें देखकर अब्बा घबराकर भाग खड़े हुए'।

उस जमाने में प्लेबैक का चलन नहीं था और अभिनेताओं को कैमरे के सामने खुद ही गाना पड़ता था। निम्मी के मुताबिक अपनी पत्नी के दबाव पर कारदार ने उसी फिल्म में निम्मी की मां वहीदन को जोगन के रोल में एक गीत गाने का मौका दिया जो उनकी ज़िंदगी का अहम मोड़ साबित हुआ। उस फिल्म को देखकर 'रणजीत मूवीटोन' के मालिक सरदार चंदूलाल शाह ने 500 रूपए महिने के वेतन पर वहीदन को मुंबई बुलवा लिया।

वहीदन ने 'रणजीत मूवीटोन' की फिल्मों 'पृथ्वीपुत्र', 'प्रोफेसर वूमन एम.एस.सी.', 'रिक्शावाला', 'सेक्रेट्री' (सभी 1938), 'ठोकर' (1939) और 'सागर फिल्म कंपनी' की महबूब द्वारा निर्देशित 'अलीबाबा' (1940) जैसी फिल्मों में काम किया। लेकिन अचानक तबीयत बिगड़ जाने की वजह से उन्हें वापस अपने मायके फतेहाबाद जाना पड़ा जहां कुछ ही दिनों बाद उनका

निधन हो गया। उस वक्त निम्मी की उम्र महज 7 साल थी। निम्मी कहती हैं, 'मेरे नाना ज़मींदार थे और मां के गुजरने के बाद मैं ननिहाल में ही रहने लगी थी। उस वक्त तक मेरी मौसी सितारा भी ज्योति के नाम से फिल्मों में कदम रख चुकी थीं। ज्योति ने 'सागर मूवीटोन' की 'कॉमरेड्स', 'एक ही रास्ता' (दोनों 1939), 'नेशनल स्टूडियोज़' की महबूब निर्देशित 'औरत', 'संस्कार' (दोनों 1940) और विजय भट्ट की 'दर्शन' (1941) जैसी फिल्मों में काम किया था। उनकी शादी गायक-अभिनेता जी.एम.दुर्रानी से हुई थी'।

(तमाम कोशिशों के बावजूद इस बात की पुष्टि नहीं हो पायी कि कोलकाता में ए.आर.कारदार की वो कौन सी फिल्म थी जिसमें वहीदन ने पहली बार अभिनय किया था। उधर मशहूर कथक-डांसर सितारा देवी के मुताबिक वहीदन आगरा की मशहूर गाने वाली थीं और अजमेर शरीफ में, ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर होने वाले सालाना उर्स में उनका गाना सुनकर महबूब ने उन्हें मुंबई बुलाया था। सितारा देवी के मुताबिक वहीदन की छोटी बहन सितारा को नया नाम 'ज्योति' सितारा देवी ने ही दिया था।)

निम्मी के मुताबिक देश आजाद हुआ तो दंगे-फसाद से बचने के लिए उन्हें अपने मौसी-मौसा के पास मुंबई आना पड़ा। उस वक्त उनकी उम्र करीब 15 साल थी। वहीदन और ज्योति की वजह से महबूब निम्मी को को भी पहले से जानते थे इसलिए एक रोज उन्होंने निम्मी को ताड़देव के 'सेंट्रल स्टूडियोज' में चल रही अपनी फिल्म 'अंदाज' की शूटिंग देखने के लिए बुलाया। फिल्म 'अंदाज़' के दो नायकों में से एक राजकपूर उन दिनों बतौर निर्माता-निर्देशक फिल्म 'बरसात' बना रहे थे।

राजकपूर ने 'अंदाज़ के सेट पर मौजूद निम्मी को देखा तो उन्हें फिल्म 'बरसात' का एक अहम रोल ऑफर कर

निम्मी के मुताबिक देश आजाद हुआ तो दंगे-फसाद से बचने के लिए उन्हें अपने मौसी-मौसा के पास मुंबई आना पड़ा। उस वक्त उनकी उम्र करीब 15 साल थी। वहीदन और ज्योति की वजह से महबूब निम्मी को को भी पहले से जानते थे इसलिए एक रोज उन्होंने निम्मी को ताड़देव के 'सेंट्रल स्टूडियोज' में चल रही अपनी फिल्म 'अंदाज' की शूटिंग देखने के लिए बुलाया।

दिया। इस तरह निम्मी के फिल्मी सफर की शुरूआत हुई। फिल्म 'बरसात' में निम्मी के हीरो प्रेमनाथ थे और इस फिल्म के मशहूर गीत 'जिया बेकरार है', 'बरसात में हमसे मिले तुम सजन' और 'पतली कमर है, तिरछी नजर है' निम्मी पर फिल्माए गए थे। निम्मी को, जिनका असली नाम 'नवाब बानो' है, राजकपूर ने ही फिल्म 'बरसात' में ये फिल्मी नाम 'निम्मी' दिया था।

करीब 17 सालों के करियर के दौरान निम्मी ने कुल 46 फिल्मों में काम किया। फिल्म 'बरसात' (1949) के बाद उन्हें 'आर.के.' की किसी और फिल्म में काम करने का तो मौका नहीं मिला लेकिन 'दुर्गा पिक्चर्स' की फिल्म 'बावरा' (1950) में जरूर वो राजकपूर की नायिका के तौर पर नजर आयीं। 'जलते दीप', 'राजमुकुट', 'वफ़ा' (सभी 1950), 'बड़ी बहू', 'बेदर्दी', 'बुजदिल', 'सजा', 'सब्जबाग़' (1951) जैसी फिल्मों के बाद दूसरी बड़ी कामयाबी उन्हें फिल्म 'दीदार' (1951) में मिली। इस फिल्म में उन्हें पहली बार दिलीप कुमार के साथ काम करने का मौका मिला था।

दिलीप कुमार के साथ निम्मी ने कुल 5 फिल्में 'दीदार' (1951), 'आन' (1952), 'दाग' (1952), 'अमर' (1954) और 'उड़नखटोला' (1955) कीं। इनमें 'अमर' के अलावा बाकी सभी फिल्में बेहद कामयाब रहीं, हालांकि 'अमर' ने भी समालोचकों की खूब तारीफें बटोरीं। 'सजा' (1951) और 'आंधियां' (1952) में निम्मी के हीरो देव आनंद थे तो शेखर के साथ उन्होंने 5 फिल्मों, 'बड़ी बहू', 'सब्ज़बाग' (दोनों 1951), 'हमदर्द' (1953), 'शिकार' (1955) और 'छोटे बाबू' (1957) में काम किया।

फिल्म 'बेदर्दी' (1951) में निम्मी ने रोशन के संगीत में एक गीत 'ननदिया जाने दे न, मोरी जनम जनम की प्रीत री' भी गाया था। उधर 'आन' (1952) भारत में बनी पहली टेक्नीकलर फिल्म थी, और अभिनेत्री नादिरा की भी ये पहली फिल्म थी। निम्मी के मुताबिक फिल्म 'आन' में निभाया मंगला नाम का उनका चरित्र इतना मशहूर हुआ था कि इस फिल्म के तमिल और अंग्रेजी

संस्करण कई जगहों पर 'मंगला' नाम से रिलीज किए गए थे।

भारत भूषण के साथ निम्मी की तीनों फिल्में 'बसंत बहार' (1956), 'सोहनी महिवाल' (1958) और 'अंगुलीमाल' (1960) भी बेहद पसंद की गयीं। 1950 के दशक में उनका करियर अपनी बुलंदियों पर रहा। 1960 के दशक में उन्होंने 'शमा' (1961), 'मेरे महबूब' (1963), 'दाल में काला' और 'पूजा के फूल' (दोनों 1964) जैसी फिल्मों में नायिका, सहनायिका और चरित्र भूमिकाएं कीं और फिर बदलते वक्त के रुख को भांपकर साल 1965 में बनी फिल्म 'आकाशदीप' के बाद 'आन', अंदाज', 'अमर', 'मदर इंडिया' जैसी फिल्मों के संवाद लेखक और 'प्राण जाए पर वचन न जाए' के निर्देशक अलीरजा के साथ शादी करके अभिनय से सन्यास ले लिया।

1960 के दशक की शुरूआत में निर्माता-निर्देशक के.आसिफ ने गुरूदत्त और निम्मी को लेकर लैला-मजनूं की कहानी पर फिल्म 'लव एंड गॉड' का निर्माण शुरू किया था जो साल 1964 में गुरूदत्त के गुजरने की वजह से अटक गयी थी। कुछ समय बाद गुरूदत्त की जगह संजीव कुमार को लेकर के. आसिफ ने दोबारा शूटिंग शुरू की। लेकिन साल 1971 में अचानक ही के. आसिफ के गुजर जाने से फिल्म 'लव एंड गॉड' अधूरी रह गयी थी। निर्माता-निर्देशक के.सी.बोकाड़िया की कोशिशों से ये फिल्म करीब 15 सालों बाद 1986 में रिलीज हुई थी, और ये निम्मी की आखिरी फिल्म साबित हुई।

निम्मी जो पहले वर्ली में रहती थीं, कुछ साल पहले जुहूतारा रोड पर शिफ्ट हो चुकी थीं। 2007 में अलीरजा साल गुज़रने के बाद से वो अब बिल्कुल अकेली हैं। सिनेमा से निम्मी का रिश्ता भले ही टूट चुका हो लेकिन हिंदी सिनेमा से जुड़े सार्वजनिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेने से वो आज भी पीछे नहीं रहतीं।

जेआईपीएल के साहित्य उत्सव ने बनाई पहचान

साहित्य के प्रति युवा पीढ़ी का न केवल लगाव है बल्कि यह पीढ़ी इस दिशा में सक्रिय होकर अपना काम भी कर रही है। जयपुर इंटरनेशनल पोएट्री लाइब्रेरी के तत्वावधान में दो दिवसीय जेआईपीएल का आयोजन शास्त्री नगर स्थित साइंस पार्क में किया गया।

इस दो दिवसीय जेआईपीएल फेस्ट का आयोजन वर्ष 2018 से किया जा रहा है। जेआईपीएल फेस्ट का शुभारंभ मुख्य अतिथि के रूप में गोकुल माहेश्वरी, दीपा माथुर ने किया। इस फेस्ट के प्रथम दिन संस्कृति और युवा विषय पर संवाद आयोजित किया गया जिसमें प्रो. विनोद शास्त्री, प्रवीण नाहटा, प्रमोद शर्मा, अश्वनी पारीक से ऋषभ मिश्रा ने संवाद किया।

फेस्ट के दूसरे दिन 'युवा और साहित्य' विषय पर संवाद का आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ साहित्यकार नीरज गोस्वामी, प्रेमचंद गांधी, कहानीकार चरण सिंह पथिक से वरिष्ठ पत्रकार व कवि रोहित कृष्ण नंदन ने संवाद किया। जेआईपीएल फेस्ट के पहले दिन शानाशायी इरफान तारिक खान की बुक लॉन्चिंग हुई व इस किताब पर चर्चा कवि नुहेन सदफ़ ने की।

इसके बाद आरती रॉय की किताब 'द अरावली प्रिंसेज' की लॉन्चिंग हुई।

जेआईपीएल के फाउंडर राहुल चौधरी ने अधिक जानकारी देते हुए बताया कि इस दो दिवसीय आयोजन के दोनों दिन ओपन माइक इवेंट के अंतर्गत काव्य महफ़िल का आयोजन किया गया जिसमें देश भर से 200 के लगभग कवियों ने हिस्सा लिया।

जेआईपीएल के चीफ कॉर्डिनेटर अनुराग सोनी ने बताया कि इस दो दिवसीय फेस्ट में कई लेखकों की किताबें लांच हुईं हैं, साहित्य प्रेमियों ने इस फेस्ट में अपनी किताब लाकर कोई दूसरी किताब भी एक्सचेंज की।

दो दिवसीय कार्यक्रम का समापन स्वराग बेंड की प्रस्तुति के साथ किया गया। इस आयोजन में मैग्जीन मीडिया पार्टनर माही संदेश व ऑनलाइन वेब पोर्टल पार्टनर www.mahisandesh.com रहे।

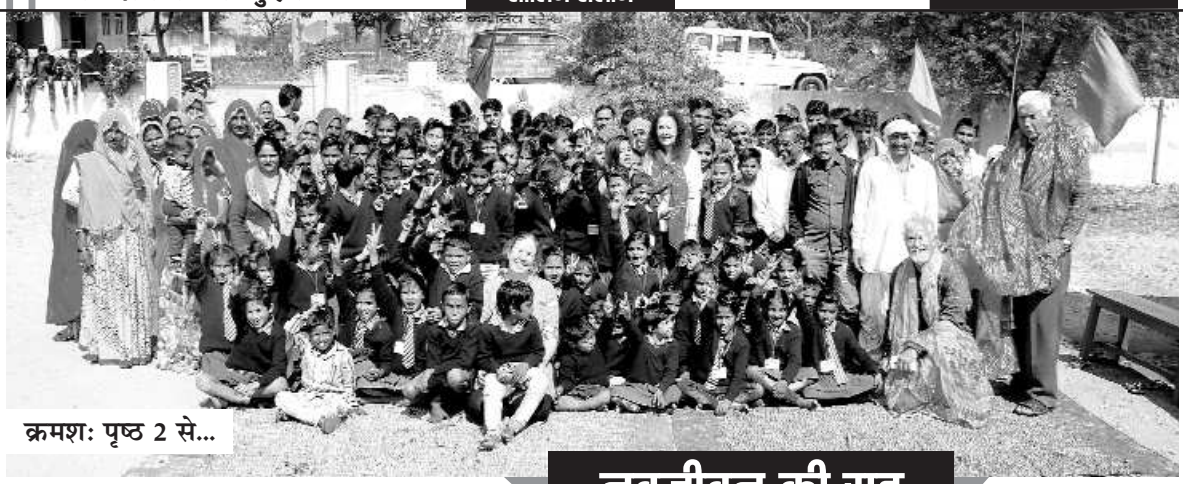

क्रमशः पृष्ठ 2 से...

नवजीवन की राह

संस्था

थिया मुकली की कुष्ठ रोगियों के लिए कुछ पैसे जुटाने की छोटी सी कोशिश से शुरू हुआ था उनकी इस संस्था का सफर। यह पहली कोशिश इतनी कामयाब हुई कि उससे थिया ने कुष्ठ रोगियों के पुनरुत्थान के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित करने का कठिन निर्णय लिया। समाज सेवा की राह सदा इतनी आसान नहीं होती और वो भी तब जब आपको एक ऐसी बीमारी से लड़ना हो जिसका पूरी तरह इलाज संभव नहीं था, और उससे भी बड़ी लड़ाई लड़नी थी लोगों की इस बीमारी के प्रति गलत धारणाओं से, लेकिन थिया ने ठान लिया था कि उन्हें यह करना है और उन्होंने अपनी अटूट मेहनत और लगन से जर्मनी और भारत के कुष्ठ रोगियों को एक नई जिंदगी दी।

1989 में थिया मुकली ने कुष्ठ और तपेदिक रोगियों की मदद करने और उनके जीवन की स्थिति में सुधार करने के लक्ष्य के साथ एक गैर-लाभकारी संघ की स्थापना की 'लाइफ विदाउट लेप्रोसी'। तब से अब तक यह संस्था भारत में जयपुर, उत्तर भारत व अन्य शहरों **सार्थक मानव कुष्ठाश्रम (SMK)** के साथ काम कर रही है। भारत में इस संस्था के प्रमुख सुरेश कौल का इस मुहिम में महत्वपूर्ण योगदान है।

संस्था की मदद से, कृष्ठ आश्रमों में लगभग 160 निवासी (आश्रम : समुदाय) गलता, गरीबदास और नवजीवन के कुष्ठ रोगी एक सभ्य जीवन जी सकते हैं। चिकित्सा देखभाल एक पूर्ण प्राथमिकता है। दवा के प्रसाधन के अलावा घाव और अल्सर के आवश्यक कीटाणुशोधन और मरहमपट्टी भी शामिल है। यदि अनुपचारित छोड़ दिया जाता है, तो इन अल्सर के परिणामस्वरूप अंग हानि हो सकती है। कुष्ठ रोग से प्रभावित आंखों का उपचार शल्य चिकित्सा द्वारा किया जाता है। इस तरह के ऑपरेशन की लागत 35 और 50 के बीच है। विशेष रबर के जूते उन्हें चोटों और परिणामस्वरूप अल्सर से बचाने के लिए कटे-फटे पैरों के लिए बनाए जाते हैं। यहां माना जाता है कि शारीरिक सुधार में आत्म-सम्मान प्रदान करना और बहाल करना भी शामिल है। आदर्श वाक्य के अनुसार 'लोगों को खुद की मदद करने के लिए' एक बुनाई और छपाई कारखाने की स्थापना की गई है जिसमें चंगा कुष्ठरोग विशेष करघे पर मेजपोश, सेट और कालीन का उत्पादन करते हैं। ये उत्पाद स्थानीय बाजारों और जर्मनी में बेचे जाते हैं। यह काम उन्हें उनकी गरिमा और आत्मसम्मान वापस दिलाता है। जो मरीज काम करने में सक्षम नहीं हैं, उन्हें हर महीने पेंशन मिलती है। इस तरह कुष्ठ रोगियों के लिए शारीरिक, मानसिक व सामाजिक उत्थान के इस मंत्र के साथ संस्था लगातार कार्य कर रही है।

भारत में परियोजनाएं

जयपुर

जयपुर और आस-पास के क्षेत्र में संस्था चिकित्सा और शिक्षा में सुविधाओं जैसे चिकित्सा केंद्र या स्कूल के साथ कुष्ठ रोगियों और उनके रिश्तेदारों का समर्थन करती है।

अजमेर

अजमेर के पास धूड़ की झुग्गियों में, संस्था द्वारा एक चिकित्सा केंद्र बनाया है जिसमें जरूरतमंदों को चिकित्सा सुविधा प्राप्त होती है।

पटना और आसपास

2009 से संस्था भारत के सबसे गरीब राज्य पटना, बिहार में काम कर रही है। यहां भी कई पुनर्वास और पुनर्स्थापन केंद्र स्थापित कर कई कुष्ठ रोगियों को सभ्य और सम्मानजनक जीवन जीने की राह दिखाई है।

नई पीढ़ी

थिया मुकली बताती हैं कि उनकी बेटी एस्ट्रिड को भी उन्हीं की तरह ही भारतीय संस्कृति से बेहद लगाव है। एस्ट्रिड ने बचपन से ही अपनी मां को समाज सेवा के इस कार्य में संलग्न देखा है और वे उससे प्रेरित हुईं। अब एस्ट्रिड संस्था के सभी कार्यों में बराबरी से सहयोग करती हैं।

संदेश

थिया और एस्ट्रिड उन सभी लोगों और दान दाताओं का शुक्रिया अदा करती हैं जिनकी मदद से संस्था कुष्ठ रोगियों के लिए यह उल्लेखनीय कार्य कर पायी है। थिया को उम्मीद है कि बदलाव की इस कहानी से प्रेरणा लेकर महिलाएं भी समाजसेवा के इस कार्य में आगे आएंगी। थिया और एस्ट्रिड मानती हैं कि हर व्यक्ति चाहे तो किसी जरूरतमंद की मदद कर सकता है पैसे और साधनों से ज्यादा एक इच्छाशक्ति की जरूरत होती है जो हमें इस कार्य के लिए प्रेरित करे।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/450/2018-20
समाचार पत्र की पंजीयन संख्या : RAJHIN/2018/75539

प्रकाशन की तिथिः माह की 1 तारीख
प्रेषण दिनांक : हर माह की 5 तारीख, सी.एस.ओ. गांधीनगर, जयपुर

Anti Leprosy Day

LEBEN OHNE LEPRA e.V.

Life Without Leprosy
Chair : Thea Kosse Muckli
Große Strasse 80. 26871 Aschendorf
Tel .: 0 4962/99 11-0. Fax: 0 49 62/99 11-99
email: info@leben-ohne-lepra.de
Our Donation Account: Sparkasse Emsland
IBAN: DE23 2665 0001 0001 0080 02 . BIC: NOLADE21EMS

Supporting : Sarthak Manav Kushthashram

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें
प्रेषक :
संपादक (माही संदेश)
50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर
के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-
302021 (राजस्थान) । मो. 9887409303

सेवा में,

@MahiSandesh MAHI SANDESH https://www.facebook.com/hindimagazinemahi/

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक **रोहित कृष्ण नन्दन** द्वारा कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स, 448, बाक्लीवाल भवन, लाल जी सांड का रास्ता, जयपुर से छपवाकर माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर, अजमेर रोड, जयपुर-302021 से प्रकाशित किया। **मो. 9887409303**